Delhi Postal Regd. No. DL © -01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

सव्वे अकंतदुक्खा य, अओ सव्वे अहिंसगा।

कोई भी जीव दुःख नहीं चाहता, इसलिए सभी जीव अहिंस्य हैं।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 37 • 19-25 जून, 2023 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 20-6-2023 • पेज: 12 • ₹10

जीवन में ज्ञान का प्रकाश व संयम होना जरूरी : आचार्यश्री महाश्रमण

12 जून 2023, मीरा रोड़।

तेरापंथ धर्मसंघ के नाथ आचार्यश्री महाश्रमणजी आज प्रातः विहार कर मुंबई के उपनगर मीरा रोड़ पधारे। भक्तों के भगवान आचार्य के दर्शन करने मुंबई में प्रवासित अनेक साध्वियां पधारी। मानों मर्यादा महोत्सव का सा दृश्य हो गया।

भक्त वत्सल परम पावन ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि यह पुरूष अनेक चित्तों वाला होता है। आदमी के मन में भाव परिवर्तन भी हो सकता है। जैन वांग्मय में लेश्या शब्द का प्रयोग भावधारा के संबंध में हुआ है। प्राणी की भावधारा में कैसे मलीनता भी होती है और कैसे निर्मलता भी हो जाती है।

कृष्ण लेश्या का बहुत खराब परिणाम होता है तो शुक्ल लेश्या का परिणाम खूब बढ़िया भी हो जाता है। हमारे चित्त में अशुद्ध भाव न आये। उनका अल्पीकरण हो। असद् से सद् की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर आगे बढ़ने का प्रयास करें।

चौरासी लाख जीव योनि में मनुष्य योनि दुर्लभ बताई गयी है। कारण एक मनुष्य साधना करके आत्मा से परमात्मा की भूमिका को प्राप्त हो सकता है। मनुष्य में अधमता भी आ सकती है। सातवें नरक तक भी जा सकता है। इंसान अच्छा इंसान बने। अंधेरे को तरीके से हटाकर दीपक जलाने का प्रयास करें। संत महापुरूष होते हैं, वे दुनिया में प्रकाश करने का प्रयास भी करते रहते हैं।

ज्ञान ग्रहण करने से अज्ञान दूर होता है। आदमी अच्छे रास्ते पर चलने की स्थिति में आ सकता है। आदमी में ज्ञान का प्रकाश और संयम का ब्रेक हो अन्यथा जीवन खतरनाक हो सकता है।

अणुव्रत एक प्रकार का ब्रेक है। गृहस्थ जीवन में अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए आदमी के जीवन में संयम और ज्ञान रहे, साथ में यह लक्ष्य हो कि मेरी आत्मा का कल्याण हो।

चतुर्मास स्थल नंदनवन के पास से गुजरते हुए आज मीरा रोड़ आये हैं। यहां पर सब में खूब धार्मिक विकास हो, चित्त समाधि रहे। साध्वी जिनरेखाजी एवं साध्वी पियुषप्रभाजी के सिंघाड़े भी आज गुरूकुलवास में आये हैं। सब का खूब विकास होता रहे।

पूज्यवर की अभ्यर्थना में साध्वी पियुषप्रभाजी एवं सहवर्ती साध्वियों ने भावों एवं गीत से अपनी अभिव्यक्ति दी। साध्वी जिनरेखाजी एवं साथ की साध्वियों ने भी अपने भाव व गीत से अपनी अभिव्यक्ति दी।

पूज्यवर के स्वागत में सभाध्यक्ष सुखलाल मादरेचा, तेयुप से राहुल चौधरी, तेरापंथ महिला मंडल ने गीत से, स्थानीय विधायक गीता जैन, कन्या मंडल ने अध्यात्मिक गुलदस्ता द्वारा त्याग, मूर्तिपूजक मेवाड़ संघ से हस्तीमल पामेचा, स्थानकवासी संघ से फूलचंद सुराणा, घेवरचंद सुराणा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला की सुन्दर प्रस्तुति हुई। पूज्यवर ने कन्यामंडल को संकल्प स्वीकार करवाये।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आत्मा व शरीर का संयोग ही जीवन : आचार्यश्री महाश्रमण

11 जून 2023, लोढा धाम।

अनन्त आस्था के केन्द्र आचार्यश्री महाश्रमणजी का लगभग मुंबई में प्रवेश हो गया है। वर्तमान में पूज्यवर के प्रवास स्थल प्रायः मुंबई के उपनगर ही कहलाते हैं। आज परम पावन का पदार्पण लोढ़ा धाम में हुआ है। रविवार के कारण लोढ़ा धाम आज महाश्रमणमय हो गया है। आस्था के धाम आर्य प्रवर ने फरमाया कि हमारे जीवन में शरीर और आत्मा दो तत्व है। पूरी सृष्टि में या तो जीव है या अजीव है। हमारे में चैतन्य रूपी जीव आत्मा और अजीव शरीर का योग है। शरीर अपने आप में पुद्गल होता है। शरीर एक पर्याय भी है, जिसका विनाश भी होता है। आत्मा एक द्रव्य है, हर आत्मा के असंख्य प्रदेश होते हैं। आत्मा अपने आप में स्थायी है। तीन काल में ही स्थायी है।

आत्मा अमर है तो पुद्गला–स्तिकाय भी अमर है। शरीर के भी परमाणु बिखर जायेंगे पर दुनिया में किसी न किसी रूप में रहेंगे। शरीर को चलाने के लिए पदार्थों का ग्रहण करना होता है। धरती पर तीन रत्न होते हैं– जल, अन्न और शास्त्रों की वाणी। शास्त्र में शासन और अनुशासन है तो प्राण भी है।

मुंबई में वर्तमान में लगभग 174 चारित्रात्माएं विराज रहे हैं। अभी दीक्षाएं भी होने वाली है। जैन शासन में अच्छी धर्म की साधना–आराधना करें। श्रावक समाज भी धर्म की दृष्टि से फलता–फूलता रहे, विकास करता रहे। जैन समाज में अनेक सम्प्रदाय हैं। नशामुक्ति का संकल्प जागे। शरीर जब तक सक्षम है, तब तक अच्छी साधना, सेवा करें। यही मानव जीवन की अच्छी उपलब्धि है।

संथारा साधक मुनि अजय प्रकाशजी की स्मृति सभा–

पूज्य प्रवर ने मुनि अजय प्रकाशजी के जीवन के बारे में बताया। आपका जन्म वि.सं. 2021 में हुआ। सपरिवार वि.सं. 2060 में दीक्षा ली। तपस्या भी बहुत की थी। 2 जून को तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान किया था। उनकी संसारपक्षीया पत्नी साध्वी नीतिप्रभाजी व पुत्री तन्मय प्रभाजी वर्तमान में धर्मसंघ में सेवा दे रही है। लगता है, उनका मनोबल अच्छा था। 20 वर्षों का संयम पर्याय रहा। मध्यस्थ भावना और आध्यात्मिक मंगल भावना स्वरूप पूज्यवर ने चार लोगस्स का ध्यान करवाया।

डॉ. मुख्य मुनि प्रवर, साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने मुनि अजय प्रकाश जी के प्रति अपनी आध्यात्मिक मंगलकामना की।

मुनि अजयप्रकाशजी की संसार पक्षीया पुत्री साध्वी तन्मयप्रभा जी ने भी अपनी आध्यात्मिक मंगल भावना स्वरूप भावांजलि अभिव्यक्त की। मुनि राजकुमारजी, मुनि अक्षय प्रकाशजी, मुनि अनेकान्त कुमारजी, मुनि दिनेश कुमारजी ने भी अपनी भावांजलि अभिव्यक्त की।

मुनि अजयप्रकाशजी की संसार पक्षीया बहिन संगीता बोथरा ने भी उनके प्रति भावांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेश कुमारजी ने किया।

गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी का 27वां महाप्रयाण दिवस

जैनचार्यों में विशिष्ट आचार्य थे गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी : आचार्यश्री महाश्रमण

आईलेंड कल्ब रिसोर्ट 6 जून 2023।

गणाधिपति गुरुदेव तुलसी का 27वां महाप्रयाण दिवस। आज ही के दिन गंगाशहर के तेरापंथ भवन में 26 वर्ष पूर्व गुरुदेव तुलसी का महाप्रयाण हुआ था। नैतिकता का शक्तिपीठ गंगाशहर में भी भावांजलि एवं भक्ति संध्या का कार्यक्रम रखा गया।

आचार्य तुलसी के पट्टधर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने गुरुदेवश्री तुलसी को भावांजलि अर्पित करते हुए फरमाया कि आकाश में नक्षत्र तारा से परिवृत चन्द्रमा चान्दनी से युक्त, बादलों से मुक्त स्वच्छ आकाश में शोभित होता है।

शास्त्रकार ने कहा है कि इसी प्रकार गणी भिक्षुओं के मध्य में भिक्षुओं से परिवृत शोभित होता है। जैन शासन में आचार्यगणी का एक महत्वपूर्ण स्थान है। जैन शासन में वर्तमान में अनेक सम्प्रदाय हैं। मुख्यतया दो संप्रदाय है– दिगम्बर और श्वेताम्बर। दो आम्नाय में विश्वास करने वाले सम्प्रदाय है। एक मूर्ति पूजा और एक अमूर्तिपूजक विचारधारा वाले।

कुछ विचारधाराओं में मूर्ति पूजा मान्य है और अनेक विचारधाराओं में मूर्ति पूजा को महत्व नहीं दिया गया है। श्वेताम्बर अमूर्ति पूजा में मुख्यतया दो आम्नाय स्थानकवासी और तेरापंथी। तेरापंथ के प्रथम आचार्य परमपूज्य भिक्षु स्वामी हुए। आचार्य भिक्षु ने नयी दीक्षा ले इस तेरापंथ धर्मसंघ को स्थापित किया उसे लगभग 263 वर्ष हो रहे हैं।

तेरापंथ में अतीत में दस आचार्य हो गये हैं। आदमी कितने–कितने जन्मों में साधना करता है, तो अच्छी निष्पति प्राप्त हो सकती है। भैक्षव शासन में आचार्यश्री तुलसी हमारे नवमें सम्राट बने। लगभग 22 वर्ष की उम्र में धर्मसंघ के अधिशास्ता बन गये। इतनी उम्र में आचार्य पद पर आ जाना एक विशेष भाग्योदय का परिचायक प्रतीत हो रहा है।

पूर्व पुण्य का योग होता है तो संभावना है कि ऐसे पद पर कोई प्रतिष्ठित होता है। पूज्य कालूगणी का साहस भी था कि इतनी छोटी उम्र में मुनि तुलसी को युवाचार्य बना दिया। आचार्यश्री तुलसी ने शुरु के वर्ष निर्माण के कार्य में लगाये। मानव कल्याणकारी कार्यक्रम अणुव्रत आन्दोलन को शुरु किया। इससे तेरांपथ को व्यापकता प्राप्त हुई। जैन–जैनेतर व राजनेताओं से भी संपर्क हुआ। राजनीति में भी धर्म और संयम की बात बताने का मौका मिला।

आचार्यश्री तुलसी के जीवन में पुण्याई का दर्शन करता हूं। उनके चेहरे का विशेष आकर्षण था। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने उनके व्यक्तित्व के बारे में लिखा है– 'कानों की छटा निराली, आंखें अमृत की प्याली, किसने सौन्दर्य सजाया रे। महाप्राण गुरुदेव।' बाह्य व्यक्तित्व में भी पुण्य का योग होता है। स्वास्थ्य भी प्रायः अनुकूल रहता था।

पद पर आना एक बात है, पद पर आकर धर्मसंघ की सेवा करना खास बात है। जन्म देना भी एक बात है, पर बाद में लालन–पालन करना विशेष बात है। पूरे धर्मसंघ को संभालते। कितनी लंबी यात्राएं की थी। कितना जन सम्पर्क किया था।

आज के दिन गंगाशहर में बोथरा भवन से तेरापंथ भवन पधारे थे। थोड़ी देर में सारा दृश्य बदल गया। तेरापंथ के धर्म सम्राट आज के दिन संसार से विदा हो गये थे। जैनाचार्यों में आचार्यश्री तुलसी विशिष्ट व्यक्तित्व थे। देश क्या, विदेश क्या? आचार्यश्री तुलसी नाम था। कितने–कितने आयाम तेरापंथ में प्रारंभ हुए थे। अपने जीवन काल में आचार्य पद को छोड़ महाप्रज्ञजी को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर दिया था। वे एक विलक्षण आचार्य थे।

मेरे जैसे कितने साधु– साध्वियों को उनके निर्देशन में आगे बढ़ने का मौका मिला था। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने भी धर्मसंघ को अच्छी तरह संभाला था। आज आचार्यश्री तुलसी की 27वीं वार्षिक पुण्यतिथि है। गंगाशहर में उनका समाधि स्थल शक्तिपीठ है। गुरुदेव ने कहा था कि मैं उपर जाकर भी देखूंगा सो गुरुदवे की जो भी कृपा हो, उनसे प्रेरणा पथदर्शन प्राप्त होता रहे। हम जैसे कितनों पर उनका उपकार है। बार–बार उनको श्रद्धांजली।

साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभाजी ने श्रद्धा अर्पित करते हुए कहा कि किसने सोचा था कि इतना छोटा बच्चा संन्यास ग्रहण कर पूरे धर्मसंघ का नेतृत्व करेगा। धर्मसंघ को आकाशीय ऊंचाइयां देगा। जो व्यक्ति पुण्यशाली होता है, वही व्यक्ति इस मार्ग को स्वीकार करता है, इस पद को स्वीकार करता है। कालूगणी की नजर पड़ी और उन्होंने कालूगणी का स्नेह और वात्सल्य प्राप्त किया और सबसे अधिक प्राप्त किया उनका विश्वास। आगम संपादन जैसे अनेक महायज्ञ– अवदान धर्मसंघ को प्रदान करवाये थे। गुरूदेवश्री तुलसी को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए मुनि अनेकान्त कुमारजी ने गीत 'तुलसी तुलसी ध्याउं...' गीत का संगान किया। मुनि अभिजीत कुमारजी ने संस्कृत भाषा में अपने भावों की अभिव्यक्त दी।

विरार से अजयराज फूलगर ने 30 की तपस्या का प्रत्याख्यान पूज्यवर से ग्रहण किया। संतोष हिरण ने अठाई की तपस्या का प्रत्याख्यान लिया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

मानव जीवन में धर्म की कमाई जरूरी : आचार्यश्री महाश्रमण

विरार, 08 जून 2023

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी आज विरार पधारे। युगदृष्टा ने पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाया कि व्यक्ति जीवन जीता है। मानव जीवन अपने आप में पूंजी होती है। शास्त्रकार ने एक कथानक से समझाया है कि वह मां शत्रु है, पिता बैरी है, जिन्होंने अपनी संतान को पढ़ाया नहीं, अच्छे संस्कार नहीं दिये हैं।

सफलता पाने के लिए श्रम करना पड़ता है। श्रम करो, सफल बनो। आलस्य मनुष्य का महान शत्रु है, जो उसके शरीर में ही रहता है। श्रम जैसा कोई बन्धु नहीं है। जिस आदमी के मन में उद्यम, साहस, धैर्य, बल, बुद्धि और पराक्रम होता है, वहां मानो भाग्य भी सहायता करने वाला बन जाए।

जीवन में पुण्य और भाग्य भी काम करता है। भाग्य अदृश्य है पर फिर भी सहायता करने वाला होता है। जैसे धर्मास्तिकाय जो अरूपी होते हुए भी कितनी सहायता करता है। मौके पर जबान पर लगाम रखना अच्छी बात होती है। बड़े बेटे ने मूल पूंजी को गंवा दिया, बीच वाले में मूल की सुरक्षा की और तीसरे ने मूल से करोड़ों–करोड़ों की सम्पति इक्कट्ठी कर ली।

इसी प्रकार मुनष्य जीवन एक पूंजी है। कई व्यक्ति हिंसा, चोरी, झूठ आदि पाप करके अद्योगति या तिर्यन्य गति में चले जाते हैं, मूल को गंवा देते हैं। कुछ मनुष्य ऐसे होते हैं, जो न ज्यादा धर्म करते हैं न ज्यादा पाप करते हैं, वे मूल को सुरक्षित रखते हैं। वे मरकर वापस मनुष्य गति में आ सकते हैं। कुछ लोग छोटे बेटे की तरह खूब तपस्या साधना करते हैं। अच्छे साधु या श्रावक बनते हैं। वे मरकर के देवगति या मोक्ष में चले जाते हैं।

गृहस्थ गहराई से चिंतन करे कि वे कौनसे बेटे के समान धर्म के क्षेत्र में आगे बढ़े हैं। जीवन अच्छा बने, स्वाध्याय, त्याग तपस्या करें। गलत मार्ग पर न जाएं। शास्त्रकार ने एक कथानक से बहुत पथ–दर्शन दे दिया है कि अपना आत्म चिंतन करो। धर्म की कमाई करने का प्रयास करें, ताकि आगे की गति अच्छी हो। संवर धर्म के साथ निर्जरा भी हो। साध्वी प्रमुखाश्री ने कहा कि संसार में सारे जीव जीना चाहते हैं, कोई मरना नहीं चाहता। व्यक्ति कैसे जीये, उस विषय में चिंतन करें। जीवन को अच्छा बनाने के लिए हम इसे दत्तचित्तता, जागरूकता से जीयें। एकाग्रता से कोई भी कार्य करें।

जीना है तो पूरा जीना,
मरना है तो पूरा मरना।
बहुत बड़ा अभिशाप जगत में
आधा जीना, आधा मरना।

हम एकाग्रता और भावक्रिया का महत्त्व समझें। वर्तमान में जीयें। पूज्यवर के स्वागत में स्वागताध्यक्ष अजयराज फूलफगर, स्थानीय सभाध्यक्ष, महिला मंडल, तेयुप , कन्या मंडल, किशोर मंडल की ओर से अपनी भावना अभिव्यक्त की गई। ज्ञानशाला की भी प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

चारित्रात्माओं का आध्यात्मिक मिलन एवं प्रवचन

विवेक विहार, दिल्ली

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमारजी एवं दिगंबर तेरापंथी आचार्य सुनील सागरजी का विवेक विहार दिगंबर जैन मंदिर में सामूहिक प्रवचन कार्यक्रम जैन एकता को बढ़ाने वाला सिद्ध हुआ। मुनि कमल कुमारजी ने अपने वक्तव्य में फरमाया कि दिगंबर श्वेताम्बर एक मंच पर आने से ही हमारी भावी पीढ़ी पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। हम जैन हैं हमारे पास बहुत बड़ा शक्तिशाली मंत्र है। हम उस नमस्कार महामंत्र का जप करके सब प्रकार के ताप-संताप-पाप का परिहार कर सकते हैं। हमें हर मांगलिक कार्यक्रमों में इस मंत्र का सामूहिक जाप करना चाहिये, जिससे एकता सदा बनी रहे। जन्मदिन, शादी की सालगिरह, दुकान, मकान, संस्थान के शुभारंभ में भी इस मंत्र का जाप सामूहिक सामायिक सहित करना चाहिये। हमारे पूरे जैन समाज में सामायिक की मान्यता है। हमें अपने परिवार सहित सामायिक करने का अभ्यास करना चाहिये। भावी पीढ़ी को संस्कारी बनाना बहुत जरूरी है। आज हमारे संस्कार समाप्त होते जा रहे हैं। होटल और हॉस्टल के युग में संस्कारी परिवारों का अभाव होता जा रहा है। समय रहते अगर नहीं जागे तो अंत में पश्चाताप करना पड़ेगा।

आचार्य सुनील सागरजी ने कहा कि हमारी बच्चियां आज अन्य मतावलंबियों के साथ जा रही है। उनका खान-पान अशुद्ध होता जा रहा है। हम चाहे श्वेताम्बर हो या दिगंबर हमारा खान-पान शुद्ध रहे। शाकाहार, शुद्धाहार का ज्यादा से ज्यादा प्रचार होना चाहिये। मैंने कमल मुनि के विषय में काफी सुना पर आज मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई। आचार्यश्री ने मुनि कमल कुमारजी को ग्रंथ भेंट किये।

मुनिश्री ने फरमाया कि अन्य संप्रदाय के इतने बड़े साधु संघ के साथ आज जीवन में कार्यक्रम का प्रथम अवसर है। आचार्य सुनील सागरजी ६० ठाणों के साथ विराजमान हैं, वे सभी कार्यक्रम में उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में अनुराग जैन, विकास नाहटा, अजीत बैद, कमल गांधी, पन्नालाल बैद, हेमराज राखेचा, मनोज सांड, अरिहंत सुराणा, मनोज बैद, किशोर बैद आदि का पूरा सहयोग रहा।

आचार्य श्री तुलसी के 27वें महाप्रयाण दिवस के आयोजन

आचार्यश्री तुलसी विराट पुंज थे

चामराजपेट , बेंगलुरू

बेंगलुरु के चामराजपेट स्थित आदर्श कॉलेज ऑडिटोरियम में अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी २७ वें महाप्रयाण दिवस पर विसर्जन दिवस का आयोजन युग प्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के शिष्य मुनि दीप कुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल विजयनगर द्वारा किया गया।

मुनि दीपकुमारजी ने कहा- आचार्य तुलसी विराट पुंज व्यक्तित्व थे। वे कीर्तिमान पुरुष थे। तेरापंथ के आचार्य में वे अब तक के सबसे छोटी उम्र के आचार्य बने और सबसे लंबे समय तक आचार्य पद पर रहे। आचार्यश्री तुलसी ने तेरापंथ को, जैन धर्म को एवं मानवता को अभिनव देन दी।

उन्होंने नारी उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई रूढ़ि उन्मूलन कार्यक्रम के माध्यम से पर्दा प्रथा, बाल विवाह, दहेज प्रथा, विधवाओं को दी जाने वाली नारकीय यातनाएं आदि का खुलकर प्रतिकार किया। विसर्जन का सूत्र भी उन्होंने दिया और प्रयोग भी उन्होंने ही किया। आंतरिक और बाहरी परिग्रह को विसर्जन करने का संकल्प करें। मुनिश्री ने निर्धारित जप एवं ध्यान का प्रयोग करवाया। मुनि काव्यकुमारजी ने कहा- 'आचार्यश्री तुलसी का भाग्य प्रबल था और पुरुषार्थ में उनका गहरा विश्वास था। उन्होंने जो सोचा और कहा, वह करके दिखाया।'

स्वामी चित्रगुणानंदजी ने कहा- आचार्यश्री तुलसी जैसे महापुरुषों के जीवन से, उनके उपदेशो से कषायो से दूर रहने की प्रेरणा मिलती है।

कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल की बहनों ने तुलसी अष्टकम से किया। तेरापंथ महिला मंडल विजयनगर के अध्यक्ष प्रेम भंसाली ने स्वागत भाषण दिया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य पूर्व महामंत्री वीणा बैद, तेरापंथी सभा विजय नगर के अध्यक्ष प्रकाश गांधी, महासभा आंचलिक प्रभारी प्रकाश लोढ़ा, अणुविभा संगठन मंत्री राजेश चावत, तेयुप विजय नगर अध्यक्ष राकेश पोकरणा आदि ने अपने विचार रखे। आभार ज्ञापन मंत्री सुमित्रा बरडिया ने किया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य मधु कटारिया एवं शशि नाहर की गरिमामय उपस्थिति रही। संचालन ममता मांडोत ने किया। कार्यक्रम में अच्छी उपस्थिति रही। सभी से लगभग १०० संकल्प पत्र भरवाए गए।

अध्यात्म जगत के महासूर्य थे आचार्यश्री तुलसी

डीडवाना

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी की शिष्या साध्वी संघप्रभाजी ठाणा-३ के सान्निध्य में आचार्य तुलसी की २७वीं पुण्य तिथि के उपलक्ष में स्थानीय जैन भवन में भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। आचार्यश्री तुलसी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डालते हुए साध्वी संघप्रभाजी ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में कहा- आचार्यश्री तुलसी अध्यात्म के महासूर्य थे। उन्होंने अणुव्रत के माध्यम से मानवता, नैतिकता व चारित्रिक उत्थान का जो आलोक बांटा, उससे सदियों तक संसार आलोकित होता रहेगा। ऐसे महापुरुष युग के नेपथ्यों में कभी ओझल नहीं हो सकते।

कार्यक्रम का शुभारम्भ तेरापंथ महिला मण्डल की बहनों के मंगलाचरण से हुआ। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेश चौपड़ा, किशोर मण्डल से श्रेयांस संचेती, विवेक चौरड़िया, लक्षित-प्रिंस महनोत, कन्या मण्डल से सुश्री हर्षिता संचेती, ज्ञानशाला के बच्चों ने आकर्षक प्रस्तुतियां द्वारा अपने आराध्य को श्रद्धाजंलि समर्पित की। साध्वी प्राज्ञप्रभाजी ने भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी प्रांशुप्रभाजी ने किया। मध्यान्ह में जप अनु ठान व रात्रि में तुलसी वर्णाक्षरी का सुन्दर कार्यक्रम रहा। प्रस्तुति के क्रम में सम्राट घोड़ावत एवं मनन महनोत ने भी हिस्सा लिया।

आमेट

रेल्वे स्टेशन स्थित तुलसी विहार में साध्वी कीर्तिलताजी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी के २७वें महाप्रयाण दिवस के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ।

साध्वीश्री ने अपने मंगल उद्बोधन में फरमाया कि आचार्यश्री तुलसी के जीवन में कितने झंझावात आये, कितने विरोध हुए लेकिन उनका एक ही स्वर निकलता 'जो हमारा करे विरोध, हम उसे समझें विनोद'। आचार्यश्री तुलसी के भक्तों के तारणहार थे। उन्होंने कितने-कितने व्यक्तियों को उनकी मुश्किल समस्याओं का समाधान देकर उन्हें सही राह दिखाई।

साध्वी शांतिलताजी ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में कहा आचार्य तुलसी एक ऐसे सिद्ध पुरुष थे, जिनकी ख्याति देश में ही नहीं विदेशों में भी शांति के मसीहा के रूप में पहचानी जाती है। साध्वी पूनमप्रभाजी ने सुमधुर गीत के माध्यम से अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। साध्वी श्रेष्ठप्रभाजी ने कहा कि गुरुदेव तुलसी का विल प0वर इतना मजबूत था कि वे जो सपना संजोते वह साकार करके दिखाते।

सभा मंत्री ज्ञानेश्वर मेहता ने गुरुदेव के बहुमुखी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला एवं आगंतुकगण का स्वागत किया। मेवाड़ के जज साहब डॉ बसंतीलाल बाबेल, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष पवन कच्छारा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष दलीचंद कच्छारा, डालचंद सोलंकी, उपासिका शांताबाई जैन, लता बाफना, आशा बाफना, गजराबाई बाफना, शकुंतला भंडारी आदि ने सुमधुर गीतिका व संभाषण के माध्यम से अपने विचार रखे। आभार ज्ञापन सभा अध्यक्ष देवेंद्र मेहता ने किया। कार्यक्रम में सरदारगढ़, दिवेर, मोखुंदा आदि स्थानों से श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही।

व्यक्ति नहीं विचार थे आचार्यश्री तुलसी

मॉडल टॉउन, दिल्ली

तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए 'शासनश्री' साध्वी रतनश्रीजी ने कहा-'आचार्य तुलसी एक व्यक्ति नहीं विचार थे, भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि पुरुष थे और मानवीय मूल्यों के प्रतिष्ठापक थे। उन्होंने अपना समग्र जीवन परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व निर्माण के लिए समर्पित कर दिया।

उनकी जन्म कुंडली में तीन चीजों की प्रबलता थी- संघर्ष, भाग्य एवं सहयोग। उनकी हर प्रगति के पीछे संघर्ष का दावानल उनको रोकने के लिए कटिबद्ध खड़ा था पर वे रूके नहीं, मुड़े नहीं, अपनी मंजिल की ओर गतिशील बने रहे। सफलता स्वयं उनका स्वागत करने के लिए, विजयमाला पहनाने के लिए तत्पर रहती थी।'

शासनश्री' साध्वी सुव्रतांजी ने कहा- 'उनका जीवन महाकाव्य, महाशास्त्र और महाग्रंथ था। उसको मापने और तुला पर तोलने के लिए कुछ विशिष्ट गज और विशिष्ट तुला चाहिए।'

'शासनश्री' साध्वी सुमनप्रभाजी ने कहा- 'युग आते हैं और चले जाते हैं। कई युगपुरुष इस धरती पर ऐसे अवतरित होते हैं, जो अपने पदचिन्ह इस धरती पर अंकित करके चले जाते हैं।'

साध्वी कीर्तिकप्रभाजी ने कहा- 'आचार्यश्री तुलसी को उपमित करने के लिए चाहे समूचा वाङ्मय खोज लिया जाए कोई उपमा नहीं मिलेगी।'

साध्वी चिंतनप्रभाजी ने कहा- 'आचार्य तुलसी जन-जन के जीवन को उजालों से भरने वाले, जीवन की हर समस्या का समाधान देने वाले और तेरापंथ धर्मसंघ को जैन धर्म की पहचान बनाने वाले महान आचार्य थे।'

कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञानशाला की छात्रा ने तुलसी अष्टकम से किया। कल्याण परिषद के सदस्य शांतिलाल जैन, तेरापंथ सभा के पूर्वाध्यक्ष दीपक जैन, शालीमार बाग तेरापंथी सभा की अध्यक्षा सज्जन बरड़िया, मॉडल टाउन तेरापंथी सभा के अध्यक्ष प्रसन्न जैन, सरोज जैन आदि वक्ताओं ने अपनी भावपूर्ण भावनाओं से आचार्यश्री तुलसी की अभिवंदना की।

ज्ञानशाला संयोजिका विजया ने तुलसी अभिवंदना की। मॉडल टाउन तेरापंथ महिला मंडल ने सामूहिक गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन महेश नाहटा ने कुशलतापूर्वक किया। अंत में आभार प्रदर्शन मॉडल टाउन तेरापंथी सभा के मंत्री पवनकुमार डोसी ने किया।

रात्रि में तुलसी संगीत- संध्या का कार्यक्रम अत्यधिक रोचक व उत्साह वर्धक रहा। अनेकानेक गायकों ने प्रेरक एवं आस्थापूर्ण गीत प्रस्तुत किये। सारा वातावरण स्वर लहरियों से अनुगुंजित हो गया। तेरापंथी सभा के मंत्री द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम परिसंपन्न हुआ।

दक्षिण दिल्ली

कैलाश कॉलोनी दक्षिण दिल्ली श्रीमान हीरालालजी गैलड़ा नम्बर 9 में आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी सुशिष्या साध्वी श्री डॉक्टर कुंदनरेखा जी के सानिध्य में आचार्य श्री तुलसी का २७वां महाप्रयाण दिवस भक्ति संध्या के रूप में उत्साहवर्धक वातावरण में मनाया गया।

इस अवसर पर साध्वीश्री कुंदनरेखाजी ने कहा बीसवीं सदी के महापुरुष, तेरापंथ धर्मसंघ के नौवें अधिशास्ता गुरुदेवश्री तुलसी प्रकाश पुरुष बन कर इस धरा पर अवतरित हुए। विकास पुरुष बन कर उन्होंने अनेक अवदानो को दुनिया के लिए समर्पित किए थे। अद्भुत जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान जैसे महान अवदान से प्रकाश स्तंभ की तरह मानव जाति को मार्ग दिखा रहे हैं, जो हमारी गति, प्रतिष्ठा बन हमें जीना सिखाते हैं।

साध्वीश्री सौभाग्ययशाजी ने कहा-आचार्य श्री तुलसी मानवता के मसीहा थे, जिन्होंने नारी जाति के उत्थान की केवल बात ही नही की बल्कि हर क्षेत्र में नारी को आगे बढ़ाया। शत-शत प्रणाम।

साध्वी कर्तव्ययशा जी ने कहा- सगला कै तुलसी म्हारो,पर तुलसी सगला रो, सुमुधर संगीत का संगान किया। सभा दक्षिण दिल्ली एवम तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्वावधान में आयोजित 'एक शाम तुलसी के नाम' में अनेकों भावांजलि प्रस्तुत कर सबको बांध दिया।

दक्षिण दिल्ली के सभा अध्यक्ष - हीरालाल गैलड़ा, टीपीएफ अध्यक्ष दिल्ली राजेश जैन गेलडा, पूर्व अध्यक्ष दक्षिण दिल्ली अरविंद दुगड़, प्रदीप खटेड़, रंजना खटेड़, प्रदीप बंसल, मीनाक्षी जैन, वंशिका बंसल, कल्पना सेठिया, सुमन कोठरी, रेणु दुगड़, सोनिया दुगड़, अंजना गैलड़ा, ने सुमुधर गीतों, कविताओं एवं व्यक्तव्यों के द्वारा भावांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर सैकड़ो भाई बहनों ने एकासन, अन्य प्रत्याख्यान, नवकारसी, पोरसी आदि विभिन्न अनुष्ठानो द्वारा गणाधिपति गुरुदेव को श्रद्धांजलि समर्पित की।

तेरापंथ के दसवें अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ का 104वां जन्मदिवस

आचार्य महाप्रज्ञ दुर्लभ विशेषताओं के समवाय थे

राजाराजेश्वरीनगर

बैंगलोर के राजाराजेश्वरी नगर स्थित तेरापंथ भवन में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के १०४वें जन्मदिवस का आयोजन युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनिश्री दीप कुमार जी ठाणा २ के सानिध्य में हुआ। कार्यक्रम की शुरूआत आर आर नगर तेरापंथ महीला मण्डल के द्वारा मंगलाचरण से हुई।

मुनि श्री दीप कुमार जी ने कहा आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की दुर्लभ विशेषताओं के समवाय थे। वे विश्व के महान संत, ऋतंभरा प्रज्ञा के धनी, उच्च कोटि के दार्शनिक, प्राच्य विधाओं के विज्ञाता, अन्वेषक, चिंतक, सारस्वत कवि, महान साहित्य सृष्टा और युगिन समस्याओं के समाधायक पुरुष थे। वे आध्यात्म अहिंसा और अनेकांत की त्रिपथगा थे। उन्होंने आचार्य श्री तुलसी के सानिध्य में उच्चस्तरीय अध्ययन किया। आगमों का कुशल संपादन किया। वे करुणा के प्रवहमान निर्झर थे। उनके करुणा नयन से समीप आने वाले को अमाप्य नेह से भिगो देते थे।

आचार्यश्री महाश्रमण जी में हम आचार्यश्री महाप्रज्ञजी को देख रहे हैं। कार्यक्रम में मुनि श्री काव्य कुमार जी ने गीत का संगान किया। आर आर नगर सभा अध्यक्ष छतर सिंह सेठिया, लता बाफना, मधु कटारिया, सुमित्रा बरडिया ने अपने अपने विचार रखें। इस अवसर पर तेरापन्थ सभा, तेरापंथ युवक परिषद, एवम महिला मण्डल विजयनगर के पदाधिकारी एवम सदस्यगण तथा आर आर नगर के श्रावक श्राविका समाज उपस्थित थे।

असीम प्रज्ञा के धनी महापुरुष थे आचार्य महाप्रज्ञ

छापर

तेरापंथ के दसवें अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ का १०४वां जन्मदिवस भिक्षु साधना केंद्र में मनाया गया। इस अवसर पर 'शासनश्री' मुनि विजयकुमार ने उपस्थित श्रावक- श्राविकाओं से कहा-'आचार्य महाप्रज्ञ असीम प्रज्ञा के धनी महापुरुष थे। ऐसा कोई भी विषय नहीं था, जहां उन्होंने अपनी प्रज्ञा का परचम न फहराया हो। उन्होंने अपने बहुआयामी साहित्य में कई अज्ञात रहस्यों का उद्घाटन किया। उनकी हंसमनीषा विद्वानों, दार्शनिकों व साहित्यकारों के लिए भी अगम्य थी। गुरु की शुभ दृष्टि को ही वे अपने भाग्य की सृष्टि मानते थे। दृष्टि के प्रतिकूल अपने प्रलम्ब जीवन में उन्होंने एक भी काम नहीं किया।'

अपनी विलक्षण प्रतिभा के कारण विक्रम संवत् २०३५ कार्तिक शुक्ला १३ को आचार्य तुलसी ने गंगाशहर में उनको 'महाप्रज्ञ' उपाधि से अलेंत किया और कहा- मुनि नथमल की अपूर्व सेवाओं के प्रति समूचा धर्मसंघ कृतज्ञता ज्ञापित करता है। यह अलंकरण ही गुरुवर द्वारा नाम के रूप में प्रतिष्ठित हो गया।

शासनश्री ने गुरुवर के प्रति श्रद्धागीत प्रस्तुत किया। मुनि आत्मानन्द ने गुरुवर की भक्ति में अपना गीत प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ तेरापंथ महिला मण्डल की बहिनों के मंगल गीत से हुआ। तेरापंथी सभा प्रवक्ता प्रदीप सुराणा, तेरापंथी सभा के मंत्री चमन दूधोड़िया, अणुव्रत समिति अध्यक्ष विनोद नाहटा, सूरजमल नाहटा, शोभा डोसी, सरोज भंसाली, हेमलता दूधोड़िया, सज्जन दूधोड़िया, सुमन भूतोड़िया, राजू नाहटा, सुमन बैद ने अपने गीत और भाषण से अपने आराध्य की अभिवन्दना की। सपना बैद ने संयोजन किया।

सफलता के श्लाका पुरूष थे आचार्य महाप्रज्ञ

मॉडल टॉउन, दिल्ली

मॉडल टाउन तेरापंथ भवन में आचार्य महाप्रज्ञ के १०४वें जन्मदिवस समारोह को संबोधित करते हुए 'शासनश्री' साध्वी रतनश्री ने कहा- 'सफलता उसी व्यक्ति के द्वार पर दस्तक देती है, जिस व्यक्ति का संकल्प वज्र जैसा मजबूत होता है। आचार्य महाप्रज्ञ ने १४ वर्ष की अवस्था में कुछ संकल्प किये थे, उन संकल्पों के सहारे बिन्दु से सिन्धु, लघु से महान एवं तलहटी से शिखर तक पहुंचने वाले बन गये। तीन दिन में एक श्लोक को याद करने वाले, एक दिन में सौ श्लोक याद करने वाले, महान साहित्यकार, महान दार्शनिक, महान कवि, महान आशु कवि, महान वक्ता आदि अनेकानेक विशेषताओं के धनी बन गये। उनके निर्माता तुलसी जैसे कुशल शिल्पी थे। अतः एक-एक सोपान पर आरोहण करते अलंघ्य ऊंचाइयों का स्पर्श कर लिया।'

'शासनश्री' साध्वी सुव्रतांजी ने कहा- 'आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन में झरने जैसी निर्मलता एवं शिशु जैसी सरलता थी। एकलव्य जैसी एकाग्रता एवं गौतम जैसी विनम्रता थी। गुरु के प्रति समर्पण एवं चारित्रक निर्मलता उच्च कोटि की थी।'

प्रज्ञा ज्योतिर्धर को नमन हमारा

राजसमंद

आचार्य महाश्रमण की सुशिष्या डॉ साध्वी परमयशा के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ के १०४वें जन्म दिवस, प्रज्ञा दिवस के त्रिदिवसीय कार्यक्रम का समायोजन हुआ। प्रथम चरण का कार्यक्रम नरेन्द्र जैन (पड़िहारा) के निवास स्थान पर आयोजित हुआ। डॉ साध्वी परमयशा ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ एक युगप्रधान आचार्य थे। उस महामनीषी में देश और दुनिया ने विवेकानन्द का दिव्य स्वरूप, राधाकृष्णन का दार्शनिक संबोध, सिद्धसेन समन्तभद्र जैसा न्याय दर्शन, देवर्द्धिगणि जैसा आगम संपादन कौशल, हेमचन्द्राचार्य जैसा सरस्वती का विराट विशाल महाग्रंथ दिखाई देता है। तेरापंथ तपोवन के नौ आचार्यों की संपदा जिन्हें विरासत में मिली। आचार्य तुलसी ने निकाय सचिव, 'महाप्रज्ञ' अलंकरण, युवाचार्य और आचार्य बनाकर जिनशासन में सुयश का विजय ध्वज फहरा दिया। जिनके कर्तृत्व और नेतृत्व को, व्यक्तित्व और वक्तृत्व को आकड़ों से, पैमानों से बताया नहीं जा सकता।

साध्वीवृंद ने 'ज्योतिर्धर की जीवन गाथा गौरव से हम गायेगें' गीत का संगान किया। साध्वी विनम्रयशा ने कविता के माध्यम से अपने आराध्य के प्रति विनयांजलि व्यक्त की। कार्यक्रम में नरेन्द्र बैद, हिम्मत कोठारी, विनोद बड़ाला, विनोद चौरड़िया, सरिता बैद, मीनल, सीमा, मंजू कावड़िया, भाई-बहन की जोड़ी प्रखर-माही कावड़िया, द्वय बहनों की जोड़ी चर्या-गुरवी धाकड़ ने गीत, कविता, वक्तव्य के माध्यम से अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मुक्ताप्रभा ने किया।

दूसरे चरण का कार्यक्रम हिम्मत कोठारी के निवास पर रात्रि में धम्म जागरणा के रूप में आयोजित हुआ, जिसके अंतर्गत अनेक भाई-बहनों ने गीतों का संगान किया।

तीसरे चरण का कार्यक्रम पदमचंद पटावरी के निवास पर 'प्रज्ञा विनयांजलि' के रूप में आयोजित हुआ।

कार्यक्रम में साध्वी मुक्ताप्रभा ने कविता और साध्वी कुमुदप्रभा ने गीत के माध्यम से प्रज्ञा विनयांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम में मंजू बड़ाला, डॉ लीना कावड़िया, डॉ सीमा कावड़िया, नीलम पटावरी, पदमचंद पटावरी, अशोक डूंगरवाल, हर्षलाल नौलखा, बोधि स्थल के अध्यक्ष ख्यालीलाल चपलोत, कांकरोली महिला मंडल, भूपेन्द्र धोका आदि ने गीत, कविता और वक्तव्य के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का मंगलाचरण जीनल डूंगरवाल ने किया। साध्वी विनम्रयशा ने संचालन किया।

विद्या, विनय और विवेक की त्रिवेणी थे आचार्यश्री महाप्रज्ञ

कृष्णानगर, दिल्ली

जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा गांधीनगर, दिल्ली द्वारा आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का १०४वां जन्मदिवस समारोह युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी ठाणा-३ के पावन सानिध्य में तेरापंथ भवन, कृष्णा नगर, दिल्ली में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ऊँ ह्रीं श्रीं महाप्रज्ञ गुरवे नमः के जप एवं मुनिश्री के मुखारविंद से नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। मुनिश्री ने आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की अभिवंदना करते हुए फरमाया कि आचार्यश्री महाप्रज्ञजी विद्या, विनय, विवेक की त्रिवेणी थे। उनका जीवन अहिंसा, संयम, तप का संगम था। वे वक्ता, लेखक एवं चिंतक ही नहीं साधनाशील व्यक्तित्व थे। इसीलिए जैन-अजैन सभी के श्रद्धास्पद बन पाए। मुनिश्री के साथ उपस्थित श्रद्धालुओं ने भी महाप्रज्ञ चालीसा का संगान किया।

मुनि अमनकुमारजी एवं मुनि नमिकुमारजी ने अपने वक्तव्य में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी को श्रद्धा-पुष्प अर्पित किये।

गाँधीनगर सभा अध्यक्ष कमल गांधी द्वारा स्वागत उद्बोधन दिया गया। दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष सुभाष सेठिया, महिला मंडल अध्यक्षा मंजू जैन, दिल्ली ज्ञानशाला के सह-संयोजक बजरंग कुंडलिया, विकास मंच के अध्यक्ष दीपचंद सुराणा, संगायक सुरेशचंद जैन आदि द्वारा इस अवसर पर वक्तव्य एवं गीत प्रस्तुत किये गये। महिला मंडल की बहिनों एवं तेरापंथ युवक परिषद के कार्यकर्ताओं ने गीतिकाओं का संगान किया। मुनिश्री की प्रेरणा से उपवास, आयम्बिल, एकासन एवं बड़ी संख्या में सामायिक की पचरंगियां हुई। कार्यक्रम का संचालन मंत्री हेमराज राखेचा द्वारा किया गया। अनेक संस्थाओं के गणमान्य पदाधिकारियों सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविका समाज की सहभागिता रही।

महाप्रज्ञ के जीवन को शब्दों में बांधना संभव नहीं

मदनगंज-किशनगढ़

आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी मधुरेखाजी के सान्निध्य में प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के १०४वें जन्मोत्सव को प्रज्ञा दिवस के रूप में मनाया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों के मंगलाचरण से हुआ। सभा अध्यक्ष मानकचंद गेलड़ा, महिला मंडल पूर्व अध्यक्षा नगीना गेलड़ा, मिटू देवी बैंगानी ने गीतिका एवं वक्तव्य के द्वारा अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी मंजूयशाजी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के व्यक्तित्व एवं कृर्तत्व पर प्रकाश डाला। साध्वी सुव्रतप्रभाजी एवं साध्वी लोकोत्तरप्रभाजी ने कविता के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किए। साध्वी मधुरेखाजी ने अपने मंगल उद्बोधन में बालक नथमल से आचार्यश्री महाप्रज्ञ तक की यात्रा को व्याख्यायित किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एक योगी संत थे, जो एक पंथ के न होकर पूरे मानव जाति के संत थे। वे राष्ट्रपति भवन मे रहने वालों के लिये वंदनीय रहे तो साथ ही झोपड़ी में रहने वालो के लिए भी पूजनीय बने। आचार्यश्री महाप्रज्ञ के दो अवदान 'प्रेक्षाध्यान' एवं 'जीवन विज्ञान' जो आज सिर्फ भारत के लोगों के लिये नहीं अपितु पूरे विश्व के लोगों के लिये उपयोगी बने हुए हैं। अगर इन्हें कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में अपना ले तो अपना जीवन सफल बना सकता है। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री डॉ अजय कवाड़ ने किया। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल के सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही।

पिता कन्यादान के साथ कन्या को परिवार, समाज व धर्म के संस्कार दें

इस्लामपुर (प- बंगाल)

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेममं इस्लामपुर द्वारा कन्यादान आखिर क्यों? कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि ज्ञान वस्तु है क्या? फिर भी ज्ञान का दान दिया जाता है। अभयदान भी कोई वस्तु नहीं है। आपके जीवन में जो अच्छाइयाँ हैं, जो गुण हैं वह धन है। साधु जीवन में चारित्र है वह सबसे बड़ा धन है। जो पाँच महाव्रत हैं, वह धन है। साधु को अपने धन की सुरक्षा करनी है। महाव्रतों का सम्यक् रूप से पालन करके आत्मा को पापकर्म से बचाना है। कन्या अपने आपमें धन है।

परिवार का कर्तव्य बनता है कि कन्या को सह-संस्कार दें कि वह सामंजस्य, सही चिंतन, सहयोग भाव परिवार को स्वर्ग बना देता हैं परिवार को संस्कारी बनाना यह शिक्षा का सार होना चाहिए।

तप अभिनंदन समारोह का आयोजन

राजनगर

आचार्य महाश्रमण की विदुषी सुशिष्या डॉ साध्वी परमयशा के सान्निध्य में कैलाशदेवी के १३ दिन की तपस्या के अभिनंदन कार्यक्रम का समायोजन हुआ। डॉ साध्वी परमयशा ने अपने उद्बोधन में कहा कि जिनशासन का प्राण है तपस्या। आत्मा का कल्याण है तपस्या। भिक्षु गण का वरदान है तपस्या। तपस्या कायरों का नहीं, शूरवीरों का काम है। इसलिए आज यह उत्सव नयनाभिराम है।

कैलाश देवी ने तप का दीप जलाया है,
मादरेचा परिवार का मन हरसाया है
गुरुकुल की सेवा का मेवा पाया है।।

साध्वीश्री ने कैलाश देवी के तपस्या के संदर्भ में फरमाया कि आपका मनोबल और आत्मबल सराहनीय है। आपका संकल्पबल और तपोबल प्रशंसनीय है। आपका धैर्यबल और अध्यात्मबल अनुकरणीय है। आपका स्वभाव और संयमबल लाजवाब है। मादरेचा परिवार कैलाश देवी की १३ की तपस्या से गौरवान्वित है। आपने मादरेचा परिवार का नाम रोशन किया है। भिक्षु शासन का सुयश बढ़ाया है। जिनशासन की गरिमा को महकाया है। गुरुकुल की सेवा का आप अदभूत आनंद लेते हो, यह सौभाग्य का इतिहास है। आप मंगलकारी तप करते रहो। साताकारी साधना करते रहो। भिक्षु शासन की कीर्ति पताका फहराते रहो।

कार्यक्रम में साध्वीवृंद ने 'भिक्षु के नंदनवन में हर्ष मनाएं, तेरापंथ में १३ करके रंगोली बनाएं' गीत का संगान किया। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र से करते हुए 'जय महावीर भगवान' गीत का संगान किया। तपोत्सव कार्यक्रम का मंगलाचरण मोनिका मादरेचा ने अपनी मधुर स्वर लहरियों के साथ किया। कार्यक्रम में पारिवारिकजन, ज्ञान मादरेचा, परिवार की बहुएं, पीहर पक्ष, नन्हे कलाकारों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति वक्तव्य, गीत व सुंदर रोचक प्रस्तुति से दी। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा के अध्यक्ष ख्यालीलाल चपलोत, लता मादरेचा, मंजू बड़ाला ने भी तपोत्सव पर अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन विनोद बड़ाला ने किया और आभार ज्ञापन भूपेन्द्र मादरेचा ने किया।

योगक्षेम अभातेयुप योगक्षेम योजना

* अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
* श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
* श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
* श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
* श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
* श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
* श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
* श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
* श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
* श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
* श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
* श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
* श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
* श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
* श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000

अपने संस्कार : अपनी निधि जैन संस्कार विधि

नूतन गृह प्रवेश

न्यूयॉर्क/इंदौर

लाडनूं निवासी न्यूयॉर्क प्रवासी श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्वर्गीय श्री चंदनमल बैद के पौत्र और दूलीचंद सुशीला बैद के पुत्र आशीष बैद का नूतन गृह प्रवेश न्यू य0र्क (यू एस्ए) में सानंद संपन्न हुआ।

इंदौर से संस्कारक विकाश छाजेड़ ने संध्या ७ बजे (न्यूयॉर्क समय सुबह ६:३०) ऑनलाइन जूम के माध्यम से करवाया।

पार्श्वनाथ स्तुति, ग्रह शांति मंत्र, उवसगहरम स्त्रोत आदि के पाठ के पश्चात विधिवत गृह प्रवेश संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में बैद परिवार, कलकत्ता से पुगलिया एवं गुप्ता परिवार और दिल्ली से डागा परिवार ऑनलाइन उपस्थित थे।

रजत वैवाहिक वर्षगांठ

नोखा

जैन संस्कार - हो घर घर प्रसार -भूरा दंपति की २५वीं वैवाहिक वर्षगांठ जैन संस्कार विधि से हंसराज भूरा एवं मौनिका भूरा की २५वीं शादी की सालगिरह जैन संस्कार विधि से नोखा में संस्कारक धर्मेन्द्र डाकलिया, युवकरत्न राजेन्द्र सेठिया व इन्द्रचंद बैद द्वारा हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न की गई।

इस अवसर पर भूरा दंपति के मंगलमय, दीर्घजीवी एवं अध्यात्ममय वैवाहिक जीवन की मंगलकामना की गई। तेरापंथी सभा अध्यक्ष निर्मल भूरा, तेयुप अध्यक्ष गजेन्द्र पारख, महिला मंडल अध्यक्षा मंजू बैद, मनोज घीया आदि गणमान्य महानुभावों ने शुभकामना व्यक्त की।

संकल्पों का उच्चारण संस्कारकों द्वारा भूरा दंपति को करवाया गया। इससे पूर्व में तेरापंथ भवन में 'शासनगौरव' साध्वी राजीमती से भूरा दंपति ने मंगलपाठ श्रवण किया।

शपथ ग्रहण समारोह

जयपुर

भिक्षु साधना केंद्र, श्याम नगर में अणुव्रत समिति जयपुर का शपथ ग्रहण समारोह मुनिश्री तत्वरूचि जी के सान्निध्य में प्रातः १०:३० बजे आयोजित किया गया, कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत गीतिका के साथ किया गया।

अध्यक्ष श्री विमल गोलछा द्वारा अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया गया, अणुविभा न्यासी दौलत डागा ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष विमल गोलछा को शपथ दिलवाई। गोलछा ने संपूर्ण कार्यसमिति पदाधिकारियों एवं सदस्यों की उद्घोषणा की तथा सभी को शपथ दिलवाई।

शांति लाल गोलछा संरक्षक, अणुव्रत समिति, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष हिम्मत जी डोसी, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की पूर्व अध्यक्षा पुष्पा बैद व सभी ने अणुव्रत समिति के उज्ज्वल भविष्य के लिए अपनी शुभकामनाएँ दी तथा गत कार्यकाल के दौरान विमल गोलछा तथा संपूर्ण टीम के कार्यों को सराहा।

मुनिश्री तत्वरुचि जी ने अपने उद्बोधन में कहा की पर्यावरण की स्वच्छता और मानव की स्वस्थता के साथ अणुव्रत की गूंज को जन-जन तक पहुँचाना है। उन्होंने अणुव्रत पर एक मधुर गीतिका भी सुनाई जिसने अणुव्रत की चेतना को पुनः सबके भीतर गुंजायमान कर दिया।कार्यक्रम का सफल संचालन मंत्री डॉ जयश्री सिद्धा द्वारा किया गया, आभार ज्ञापन प्रदीप नाहटा द्वारा किया गया।

मनोनुशासनम्

:: आचार्य तुलसी ::

इनका संबंध पार्थिव, तैजस, वायवीय और जलीज तत्त्वों से है। साधक ध्यान करने के लिए बैठे और यदि उसे दैहिक धारणाओं के द्वारा पिंडस्थ ध्यान का अभ्यास करना हो तो वह सर्वप्रथम किसी विशाल और निर्मल स्थान पर बैठने की अनुभूति करे और उस अनुभूति को इतना पुष्ट बनाए कि उसे प्राप्त अनुभूति में तन्मयता प्राप्त हो जाए। उस विशाल और निर्मल आसन पर स्थित होकर अपने पार्थिव शरीर में असीम शक्ति का अनुचिंतन करे। यह धारणा की पहली कक्षा–पार्थिवी धारणा है।

आचार्य रामसेन पिंड (देह) की सिद्धि और शुद्धि के लिए मारुती, तैजसी और जलीय–इन तीनों धारणाओं को मान्य करते हैं–

तत्रादौ पिंड-सिद्ध्यर्थं, निर्मलीकरणाय च।
मारुतीं तैजसीमाप्यां, विदध्याद् धारणां क्रमात्।।

– तत्त्वानुशासन-१८३

शरीर में अग्नि का स्थान मणिपुर चक्र या नाभिकेंद्र है। हमारे तैजस शरीर का मुख्य केंद्र यही है। इस स्थान में तैजस का दृढ़ और चिरंतन चिंतन करने से तैजस शरीर जागृत और अधिक क्रियाशील हो जाता है। दृढ़ संकल्प के द्वारा उसे सक्रिय बनाकर उसके द्वारा समस्त दोषों के क्षय होने का अनुभव किया जाता है। इस प्रकार आग्नेयी धारणा के द्वारा दोषक्षय की क्रिया संपन्न की जाती है।

इसके पश्चात् तीसरी कक्षा में मारुती धारणा का उपयोग किया जाता है। पवन का काम सफाई करना है। आग्नेयी धारणा के द्वारा दोषों का दहन होने पर जो भस्म हो जाती है, उसे शरीर के बाहर ले जाने के लिए मारुती धारणा का प्रयोग किया जाता है। समूचे शरीर में चारों ओर से तेज हवा का प्रवेश हो रहा है और वह नाभिकमल स्थित भस्म को उड़ाकर बाहर ले जा रही है। इस प्रकार की तीव्र अनुभूति करते-करते साधक को आत्मस्थता का अनुभव होने लगता है।

चौथी कक्षा में अवशेषों की शुद्धि के लिए वारुणी धारणा का उपयोग किया जाता है। मारुती धारणा के द्वारा दोष-भस्म को बाहर ले जाने पर भी जो कुछ शेष रह जाता है, उसे वारुणी धारणा के द्वारा साफ कर दिया जाता है। साधक अनुभव करता है कि गहरे बादल उमड़ रहे हैं। घनघोर वृष्टि हो रही है। उसका जल शरीर में प्रवेश कर नाभिकमल को पखाल रहा है और वह अत्यंत निर्मल हो रहा है। इस निर्मलता की अनुभूति के साथ अपने आत्मस्वरूप की निर्मलता में विलीन हो जाए और फिर धारणा से ध्यान की स्थिति में पहुँच जाए।

धारणा के अनेक रूप और प्रकार हो सकते हैं। इसलिए इसकी व्याख्या भी अनेक रूपों में की गई है।

पार्थिवी द्रव्यों–चित्र, मूर्ति आदि पर चित्त को स्थिर करना पार्थिवी धारणा है।

दीप आदि तेजोमय पदार्थ पर दृष्टि को स्थिर करना आग्नेयी धारणा है।

वायु के स्पर्श का श्वास-प्रश्वास पर मन को स्थिर करना मारुती धारणा है।

जलाशय के तट पर बैठकर शांत जल पर दृष्टि को स्थिर करना वारुणी धारणा है।

धारणा ध्यान की प्रथम तैयारी है। इसमें चित्त पूर्णतः स्थिर नहीं होता किंतु वह एक दिशा में होते-होते ध्यान की पृष्ठभूमि प्रस्तुत कर देता है। फिर साधक धारणा से मुक्त होकर ध्यान की कक्षा में चला जाता है।

पदस्थ ध्यान

यह ध्यान पदों–मंत्रों व बीजाक्षरों के आलंबन से किया जाता है। पिण्डस्थ ध्यान जैसे देहावलम्बी है, वैसे पदस्था ध्यान शब्दावलम्बी है। पिण्डस्थ ध्यान में देहवर्ती चैतन्य केन्द्र, देह की अनुप्रेक्षा तथा देह और आत्मा की पृथकता- ये मुख्य ध्येय बनते हैं। पदस्थ ध्यान में शब्द की सूक्ष्म शक्ति, उसके सुक्ष्म और स्थूल उच्चारण की प्रक्रिया और शब्दवर्ती अर्थ के साथ तन्मयता -ये मुख्य ध्येय होते हैं। इस ध्यान के आधार पर ध्यान-मंत्रों का पर्याप्त विकास हुआ है। जप भी शब्दावलम्बी होता है और पदस्थ स्थान भी शब्दावलम्बी होता है। ये दोनों किसी रेखा पर भिन्न होते हैं और किसी पर अभिन्न हो जाते हैं। जप का अर्थ है- शब्द की अर्थात्मा में तन्मय हो जाना। पदस्थ ध्यान में भी यही तन्मयता अपेक्षित है।

तप के तीन प्रकार हैं:

१- वाचित २- उपांशु ३- मानसिक

उच्चारणपूर्वक किया जाने जप वाचिक होता है। मन्द उच्चारण होंठों से बाहर न निकलने वाले उच्चारण के द्वारा जप उपांशु होता है। उच्चारण से अतीत केवल मानसिक चिंतन के रूप में किया जाने वाला जप मानसिक होता है। वाचिक जप से उपांशु और उपांशु जप से मानसिक जप में शब्द की ऊर्मियां सूक्ष्म होती है और सूक्ष्म होने के कारण वे अधिक शक्तिशाली होती हैं। इसी आधार पर वाचिक की अपेक्षा उपांशु और उपांशु की अपेक्षा मानसिक जप अधिक शक्तिशाली होता है।

जप पदस्थान की ध्यान की पूर्वावस्था है। प्रारंभ में वाचिक जप का अभ्यास करना चाहिए। उसका अभ्यास हो जाने पर उपांशु का अभ्यास होना चाहिए। उसके पश्चात् मानसिक जप का अभ्यास करना चाहिए। मानसिक जप की अवस्था जब ध्येय पर एकाग्र हो जाती है, तब वह पदस्थ ध्यान के रूप में वह सूक्ष्म हो जाता है। मानसिक जप में वह चिंतन का आकार ले लेता है। पदस्थ ध्यान में वह दृश्य बन जाता है।

पदस्थ ध्यान के लिए इष्ट मंत्रों का चुनाव अपनी भावना, रुचि और श्रद्धा के आधार पर किया जा सकता है।

रूपस्थ और रूपातीत ध्यान

द्रव्य दो प्रकार के होते हैं- रूपी और अरूपी। आत्मा अरूप है। पुद्गरूपी है। वह रूपी होने के कारण इन्द्रिय के द्वारा ग्राह्य है। आत्मा का इन्द्रिय के द्वारा इसलिए ग्रहण नहीं होता कि वह अरूप है। ध्यानकाल में ये दोनों प्रकार के द्रव्य ध्येय बनते हैं। रूपी ध्येय स्थूल होता है। और अरूपी ध्येय सूक्ष्म। इसीलिए साधक प्रारंभ में रूपी ध्येय का आलम्बन लेता है। उस पर मन की एकाग्रता सध जाने पर वह अरूपी ध्येय पर ध्यान का अभ्यास करता है। रूपी ध्येय में परमाणु से लेकर किसी बड़े आकार का आलम्बन लिया जा सकता है। वैसे पिण्डस्थ ध्यान भी रूपस्थ ध्यान से भिन्न नहीं है। शरीर स्वयं रूपी है। उस पर ध्यान करना रूपस्थ ध्यान ही है। शब्द रूपी है। उन पर ध्यान करना भी रूपस्थ ध्यान है।

किन्तु शरीर और शब्द की अपनी विशेषता है, इसलिए उन्हें रूपस्थ ध्यान से पृथक स्थान दिया गया है। शरीर में चैतन्य की अभिव्यंजना होती है, इसलिए बाहरी रूपी ध्येयों की अपेक्षा शरीरगत ध्येय अधिक सफल होता है। शब्द का भी चैतन्य केन्द्र से निकट का सम्बन्ध होता है, इसलिए उसका भी अपना विशेष महत्व है। शरीर और शब्द के अतिरिक्त शेष जितने रूपी ध्येय होते हैं, वे सब रूपस्थ ध्येय की कोटि में आते हैं।

रूपातीत ध्यान में अरूप आत्मा का आलम्बन लिया जाता है। हम उसे साक्षात् देख नहीं पाते हैं। शाब्दिक ज्ञान के द्वारा उसके स्वरूप निश्चित कर उस पर मन को एकाग्र करते हैं। रूपातीत ध्यान शाब्दिक भावना के माध्यम से होता है। वह माध्यम निरालम्बन ध्यान की स्थिति में ही छूट सकता है।

आचार्य रामसेन ने रूपस्थ और रूपातीत दोनों को पिण्डस्थ ध्यान माने जाने के अभिमत का उल्लेख किया है। उसका आशय यह है कि ध्येय-अर्थ ध्याता के पिण्ड (देह) में स्थित होकर ही ध्यान का विषय बनता है, इसलिए चेतन और अचेतन दोनों का ध्यान पिण्डस्थ ध्यान कहलाता है:

ध्यातुः पिण्डस्थितश्चैव, ध्येयो ऽर्थो ध्यायते यतः।
ध्येयं पिण्डस्थमित्याहुरतएव च केचन।।

-तत्त्वानुशासन -१३४

२६- निर्विचारं निरालम्बनम्।।

२६- निर्विचार (विचारातीत, भावातीत या विकल्पातीत) ध्यान को निरालम्बन कहा जाता है।

निरालम्बन ध्यान

सालम्बन ध्यान का अभ्यास करते-करते मन दीर्घकाल तक एकाग्र होने लग जाता है। एकाग्रता की अन्तिम परिणति विचार-शुन्यता है। ध्यान के आरंभ काल में किसी एक लक्ष्य पर चित्त की एकाग्रता होती है और अन्त में वह लक्ष्य छूट जाता है। केवल चित्त स्थिरता रह जाती है। इसीलिए अनेक साधकों का यह अनुभव है कि सालम्बन ध्यान में योग्यता प्राप्त कर लेने पर निरालम्बन ध्यान की योग्यता स्वयं प्राप्त हो जाती है।

कुछ साधक भिन्न प्रकार से सोचते हैं। उनका चिंतन है कि सालम्बन ध्यान परावलम्बी ध्यान है। उनकी दृष्टि में उसकी उपयोगिता नहीं है। उनका मानना है कि प्रारंभ से ही विचार-शुन्यता का अभ्यास करना चाहिए।

विचार शुन्यता ध्यान की वास्तविक स्थिति है, इसमें कोई सन्देह नहीं। सालम्बन ध्यान में ध्याता और ध्येय भिन्न होते हैं, जबकि निरालम्बन ध्यान में ध्याता और ध्येय के बीच में कोई भेद नहीं होता। सालम्बन ध्यान में चित्त बाह्य विषयों पर स्थित होता है जबकि निरालम्बन ध्यान में वह आत्मगत हो जाता है- जिस चैतन्य केन्द्र से वह प्रवाहित होता है, उसी में जाकर विलीन हो जाता है। निरालम्बन ध्यान से आत्मा की आवृत और सुषुप्त शक्तियां जितनी जागृत होती हैं, उतनी सालम्बन ध्यान से नहीं होती। सालम्बन ध्यान का प्रभाव मुख्य रूप से नाड़ी-संस्थान और चित्त पर होता है। निरालम्बन ध्यान का मुख्य प्रभाव चैतन्य केन्द्र पर होता है।

प्रश्न केवल क्षमता का है। यदि किसी साधक में निरालम्बन ध्यान की क्षमता सहज हो तो उसे सालम्बन ध्यान की अपेक्षा नहीं होगी किन्तु जो साधक प्रारंभ में निरालम्बन ध्यान न कर सके उसके लिए इस अभ्यास का महत्व है कि वह सालम्बन ध्यान के द्वरा निरालम्बन ध्यान की योग्यता प्राप्त करें।

निरालम्बन ध्यान की कुछ पद्धतियां हैं। उन्हें जान लेने पर उसका अभ्यास सहज हो जाता है। उनका पहला अंग है- प्रयत्न की शिथिलता। सालम्बन ध्यान में जैसे शरीर वाणी और श्वास का प्रयत्न भी शिथिल कर दिया जाता है। निरालम्बन ध्यान वस्तुतः अप्रयत्न की स्थिति है।

(क्रमशः)

संबोधि

:: आचार्य महाप्रज्ञ ::

मिथ्या सम्यक् ज्ञान मिमांसा

वैर वैर से शांत नहीं होता। वैर की शांति अवैर से होती है। आत्म-द्रष्टा सब प्राणियों में आत्मत्व ही देखता है। वह न किसी को शत्रु मानता है, न किसी को मित्र द्य शत्रु और मित्र की कल्पना सारी व्यावहारिक है। मैत्री और शत्रुता परिचित के साथ होती है। आत्मा यदि अपरिचित है तो कौन शत्रु है और कौन मित्र। अगर आत्मा परिचित है तो सब आत्माएं हैं, कोई शत्रु और कोई मित्र नहीं है। शत्रु और मित्र की बुद्धि राग-द्वेष को उत्पन्न करती है। राग से व्यक्ति प्रेम करता है और द्वेष से घृणा। दोनों ही बंधन हैं। सत्यद्रष्टा अभय और निर्वैर होता है। वह न किसी को डराता है और न किसी से डरता है।

15- आदानं नरकं दृष्ट्वा, मोहं तत्र न गच्छति।
आत्मारामः स्वयं स्वस्मिन्लीनः शान्तिं समश्नुते।।

आदान-परिग्रह को नरक मानकर जो उससे मोह नहीं करता और स्वयं अपने में लीन रहता है, वह आत्मा में रमण करने वाला व्यक्ति शांति को प्राप्त होता है।

परिग्रह आदान इसलिए है कि वह कर्म का ग्रहण करता है। कर्म के संग्रह से आत्मा का पतन होता है। सत्य-द्रष्टा परिग्रह में आसक्त नहीं होता, क्योंकि वह इसे बंधन मानता है। आत्मा की शांति परिग्रह में नहीं है, वह है आत्मलीनता में साधक इसीलिए आत्मलीनता में व्यग्र रहता है। परिग्रह के मोह में फंसे व्यक्तियों को शांति नहीं मिलती। ये परिग्रह की आशा में ही व्यस्त रहते हैं। शंकराचार्य ने ऐसे व्यक्तियों के लिए लिखा है जिसका शरीर जीर्ण हो गया है, सिर के बाल सफेद हो गए हैं, मुंह दांतों से विहीन हो गया है; फिर भी वे आशा से मुक्त नहीं होते।१

16- इहैके नाम मन्यन्ते, अप्रत्याख्याय पापकम्।
विदित्वा तत्त्वमात्मासौ, सर्वदुःखाद्विमुच्यते।।

कुछ लोग यह मानते हैं कि पाप का परित्याग करना आवश्यक नहीं होता। जो आत्म-तत्त्व को जान लेता है, वह सब दुःखों से मुक्त हो जाता है।

17- वदन्तश्चाप्यकुर्वन्तो, बन्धमोक्षप्रवेदिनः।
आश्वासयन्ति चात्मानं, वाचो वीर्येण केवलम्।।

जो केवल कहते हैं, किंतु करते नहीं, बंधन और मुक्ति का निरूपण करते हैं, किंतु बंधन से मुक्ति मिले वैसा उपाय नहीं करते, वे केवल वचन के वीर्य से अपने आपको आश्वस्त कर रहे हैं।

18- न चित्रा त्रायते भाषा, कुतो विद्यानुशासनम्।
विषण्णाः पापकर्मेभ्यो, बालाः पण्डितमानिनः।।

वे अज्ञानी अपने आपको पण्डित मानते हुए भी बाल हैं। वे पाप-कर्म से विषाद को प्राप्त हो रहे हैं। उन्हें विचित्र प्रकार की भाषाएं और विद्या का अनुशासन-शिक्षण भी पाप से नहीं बचा सकता।

पांडित्य और सम्यग् ज्ञान का अंतर जान लेना आवश्यक है। सम्यग् ज्ञान कहीं बाहर से नहीं आता। उसके लिए स्वयं में प्रवेश करना होता है। पांडित्य-विद्वत्ता बाहर से आती है। जो भी अर्जित ज्ञान है वह सब पांडित्य है, उधार है, अपना नहीं है। पंडित बनने के लिए विश्व में बहुत साहित्य है, शिक्षक है, वक्ता हैं और भी विविध प्रकार के आधुटिक उपकरण हैं। वैज्ञानिक कहते हैं-मनुष्य के दिमाग में इतने प्रकोष्ठ हैं जिनमें समग्र विश्व का साहित्य संगृहीत किया जा सकता है।

दुनिया के सभी पुस्तकालयों का ज्ञान उनमें भरा जा सकता है। इतनी क्षमता होते हुए भी यह स्पष्ट है कि मनुष्य स्वयं को इस ज्ञान से नहीं जान सकता। श्कन्फ्यूसियसश का बड़ा कीमती वचन है-श्ज्ञानी वह होता है जो अपने को जानता है; और विद्वान् वह होता है जो दूसरों को जानता है।श विद्वान् और ज्ञानी का यह भेद स्पष्ट सूचित करता है कि ज्ञान की प्रक्रिया शिक्षा से सर्वथा भिन्न है। कबीर ने ठीक कहा है-

पंडित और मसालची, दोनूं सूझे नाय।
औरन को करै चांदनो, आप अंधेरे मांय।।

परमात्म प्रकाश में लिखा है-

आत्म-ज्ञान विण अन्य जे, ज्ञान न तेनूं नाम।
ते थी रहित पण तप बने दुख कारण सुतराम्।।

(क्रमशः)

उपासना (भाग एक)

:: आचार्य महाश्रमण ::

श्रावक श्री रूपचंदजी सेठिया

रुपचंदजी ने तत्काल एक आदमी को दौड़ाया और उस ग्राहक को वापस बुलवाया। उन्होंने उसके दो गज कपड़े की पूर्ति तो की ही, मुनीम को भी दुकान छोड़ने को कह दिया।

वे जैसे अध्यात्म-प्रेमी और शासन-भक्त श्रावक थे, अन्तिम समय में भी उन्हें उसी के अनुरूप धर्म का सहयोग मिला। सं-१९८३ के फाल्गुन महीने में अष्टमाचार्य कालूगणी का सुजानगढ़ में पदार्पण हुआ, उन दिनों रूपचन्दजी रुग्ण थे। आचार्यप्रवर स्थंडिल भूमि से वापस आते समय प्रायः दोनों समय ही दर्शन दिया करते थे। प्रातः काल में तो कई बार वहां विराज कर उन्हें सेवा भी कराते थे। फाल्गुन शुक्ला सप्तमी की संध्या को जब कालूगणी तथा मुनि मगनलालजी आदि उन्हें दर्शन देकर वापस स्थान पर पधारे, तब बालचन्दजी बैंगानी आदि उपस्थित श्रावकों को फरमाया कि रूपचन्दजी का शरीर टिकना अब कठिन लगता है, अतः अन्तिम समय में उन्हें धर्म का सहाय मिले तो ठीक रहे। आचार्यश्री की उस भावना के आधार पर कुछ श्रावक रात को उनके वहां गये। उस समय उनके श्वास का वेग अधिक था। श्रावकों ने उन्हें धर्म-ध्यान की प्रेरणा देते हुए कहा कि आपको त्याग-प्रत्याख्यान तो काफी हैं ही, किन्तु इस अवस्था में विशेष कुछ करने की भावना हो तो यह अच्छा अवसर है।

रूपचन्दजी ने उनकी भावना को समझते हुए कहा-आप लोग मुझे धर्म का सहाय देते हैं, यह उचित ही है। संथारे का विचार तो अभी मेरा है नहीं। देर धार्मिक ढालें आदि सुनाकर श्रावकगण वापस आ गये। रूपचन्दजी अपने विषय में पूर्ण सावधान थे। आधी रात के लगभग उन्होंने पास में बैठे व्यक्तियों से कहा कि अब मुझे नीचे सुला दो। जब उन्हें नीचे सुला दिया गया तब सबके सम्मुख उन्होंने अरिहंत, सिद्ध और गुरु की साक्षी से यावज्जीवन के लिए चतुर्विध आहार का त्याग कर संथारा ग्रहण कर लिया। लगभग एक घंटा पांच मिनिट का संथारा प्राप्त कर रात्रि के एक बजने के कुछ देर बाद ही उनका देहान्त हो गया। लगभग दो बजे कालूगणी नींद से अचानक उठकर विराज गये और मुनि मगनलालजी को जगाकर फरमाया कि रूपचन्दजी का शरीरांत हो गया है, ऐसा मालूम पड़ता है। मुनि मगनलालजी ने पूछा-'क्या कोई व्यक्ति अभी आया है?' कालूगणी ने कहा कि नहीं, आदमी तो कोई नहीं आया, परन्तु अभी-अभी सारा स्थान एक साथ जोर से प्रकाशित हो उठा था अतः मेरा यह अनुमान है। उक्त बातचीत के थोड़ी देर पश्चात् ही उनके दिवंगत होने की सारी जानकारी देने के लिये वहां से कई व्यक्ति आ गये। इस प्रकार श्रावक रूपचन्दजी अपनी साठ वर्ष की अवस्था में एक आदर्श श्रावक का उदाहरण प्रस्तुत कर गये। उन्होंने पांच आचार्यों के समय को देखा और बड़ी लगन से सबकी सेवा में लगे रहे।

(क्रमशः)

अवबोध

:: मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ::

कर्मबोध

प्रश्न 16 - कर्मों का अस्तित्व (सत्ता) कौन से गुणस्थान तक है ?

उत्तर : मोहनीय कर्म का अस्तित्व ग्यारहवें गुणस्थान तक रहता है। ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अंतराय कर्म का बारहवें गुणस्थान तक रहता है। शेष चार अघात्य कर्म का चौदहवें गुणस्थान तक रहता है।

प्रश्न 17- कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर : चार अघात्य कर्म ही भवोपग्राही कर्म हैं। ये कर्म जीवन के अंत तक रहते हैं। इस दृष्टि से इन्हें भवोपग्राही कर्म कहते हैं। ये चौदहवें गुणस्थान तक बने रहते हैं।

प्रश्न 18 - कर्म के क्या कार्य हैं?

उत्तर :	ज्ञानावरणीय	-	ज्ञान-प्राप्ति में बाधा
	दर्शनावरणीय	-	दर्शन-प्राप्ति में बाधा
	वेदनीय	-	सुख व दुःख की अनुभूति
	मोहनीय	-	मूढ़ता की उत्पत्ति
	आयुष्य	-	भव स्थिति
	नाम	-	शुभ-अशुभ शरीर निर्माण, अंगोपांग आदि
	गोत्र	-	अच्छी व बुरी दृष्टि से देखे जाना
	अंतराय	-	आत्म शक्ति की उपलब्धि में बाधक

प्रश्न 16- कर्म की स्थिति कितनी है ?

उत्तर :	कर्म	जघन्य	उत्कृष्ट
	ज्ञानावरणीय	अन्तर्मुहर्त्त	३० करोड़ाकरोड़ सागर
	दर्शनावरणीय	अन्तर्मुहर्त्त	३० करोड़ाकरोड़ सागर
	वेदनीय	अन्तर्मुहर्त्त	३० करोड़ाकरोड़ सागर
	दर्शन मोहनीय	अन्तर्मुहूर्त	७० करोड़ाकरोड़ सागर
	चारित्र मोहनीय	अन्तर्मुहूर्त	४० करोड़ाकरोड़ सागर
	आयुष्य -	अन्तर्मुहूर्त	करोड़ पूर्व के एक तिहाई भाग अधिक 33 सागर
	नाम	८ मुहूर्त्त	२० करोड़ाकरोड़ सागर
	गोत्र	८ मुहूर्त्त	२० करोड़ाकरोड़ सागर
	अन्तराय	अन्तर्मुहूर्त	३० करोड़ाकरोड़ सागर

(क्रमशः)

आचार्य श्री तुलसी के 27वें महाप्रयाण दिवस के आयोजन

सवाई माधोपुर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के निर्देशानुसार स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल आदर्शनगर (सवाई माधोपुर) द्वारा अणुव्रत अनुशास्ता गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी की २७वीं पुण्यतिथि विसर्जन दिवस के रूप में महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वीश्री पुण्यप्रभाजी ठाणा-४ के सानिध्य में बजरिया स्थित स्वाध्याय भवन में आयोजित की गई।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीगण के मंगलाचरण से हुई। श्रावक श्राविकाओं ने परमपूज्य गुरुवर के प्रति अपनी श्रद्धासिक्त भावनाओं की प्रस्तुति दी। महिला मंडल की बहिनों ने सुमधुर गीतिका की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के नन्हे मुन्नों ने गतिविधि आधारित भावपूर्ण संगान प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर साध्वीश्री पुण्यप्रभा जी ने आचार्यश्री तुलसी के व्यक्तित्व व कृर्तत्व की चर्चा करते हुए उनके द्वारा दिये गए अवदानों की विस्तृत जानकारी दी। विसर्जन को जीवन निर्माण का महत्वपूर्ण मंत्र बतलाते हुए साध्वीश्रीजी ने अर्जन से विसर्जन की दिशा में कदम बढ़ाने की प्रेरणा दी। महिला मंडल की मन्त्री सपना जैन ने भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी। नन्हे मुन्नों को पुरस्कृत किया गया व महिला मंडल अध्यक्ष अनिता जैन ने सफल आयोजन के लिए सभी का आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी निर्मलप्रभाजी ने किया।

सायंकालीन सत्र में 'कन्यादान क्यों?' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन साध्वी पुण्यप्रभाजी के सानिध्य में किया गया जिसमें महिला मंडल व कन्या मण्डल की सदस्याओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता में चित्रा जैन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। साध्वीश्रीजी ने विषय वस्तु से सम्बंधित महत्वपूर्ण विचाराभिव्यक्ति दी।

आचार्यश्री तुलसी विरल विभुति थे

नोखा

युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी श्रमशील, कर्मशील, विकासपुरूष थे। उन्होंने समाज को नई दिशा दी, मानवता को अणुव्रत का अवदान दिया। वे देश की विरल, अमूल्य विभूति थे। आध्यात्मिकता, वैज्ञानिकता के पूरक तुलनात्मक धर्म की परिभाषा सरलता से समझाते। कीर्तिमान, लाकापुरूष थे। शताब्दियों में ऐसे महापुरूष पैदा होते हैं। यह उद्‌गार 'शासन गौरव' साध्वी राजीमती ने आचार्य तुलसी के २७वें महाप्रयाण दिवस पर नोखा तेरापंथ भवन में व्यक्त किये। तेरापंथ महिला मंडल ने तुलसी जीवन झांकी कव्वाली के रूप में प्रस्तुत की। तेयुप युवकों द्वारा 'तुलसी का स्मरण' गीतिका द्वारा श्रद्धा समर्मित की गई। एकासन तपस्या १०१ की गई।

कार्यक्रम में डॉ प्रेमसुख मरोठी, भोजराज बैद, तेरापंथी सभा अध्यक्ष निर्मल कुमार भूरा, उपाध्यक्ष इन्द्रचंद बैद 'कवि', सुनील बैद, उपासक अनुराग बैद, कोलकाता से समागत प्रेक्षाध्यान साधक रणजीत दूगड़, उपासक मनीष मालू, तेयुप मंत्री अरिहंत संकलेचा, गोपाल लूणावत, महिला मंडल मंत्री प्रीति मरोठी ने गणाधिपति तुलसी के प्रति श्रद्धा भावना व्यक्त की एवं उनके व्यक्तित्व कृर्तत्व पर प्रकाश डाला।

साध्वी विधिप्रभा, साध्वी प्रभातप्रभा ने आचार्य तुलसी की महानतम देन अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, जैन विश्व भारती की चर्चा-परिचर्चा प्रस्तुत की। साध्वियों द्वारा सामूहिक गीत का संगान प्रभावक रहा। कार्यक्रम का कुशल संचालन तेरापंथी सभा के मंत्री लाभचंद छाजेड़ ने किया।

मानवता के उद्धार हेतु आचार्य तुलसी ने जीवनभर तपस्या की

जयपुर

महाप्राण गुरुदेवश्री तुलसी भारतीय ऋषि परंपरा के प्रतीक व सफल संवाहक थे। ऋषि मुनि स्वयं जागरूक होते हैं और जन समुदाय को जागरण का संदेश देते हैं। गुरुदेवश्री तुलसी आधुनिक तेरापंथ के महान निर्माता थे। समूची मानवता के उद्धार हेतु उन्होंने जीवनभर तपस्या की थी। उक्त महत्वपूर्ण विचार 'शासन गौरव' साध्वी कनकश्रीजी ने गुरूदेवश्री तुलसी के २७वें महाप्रयाण दिवस पर अपनी विनयांजलि करते हुए व्यक्त किए।

साध्वीश्री ने प्रसंगवश कहा-'महान अध्यात्म विभूति आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एवं अहिंसा यात्रा के महानायक आचार्यश्री महाश्रमणजी गुरुदेवश्री तुलसीजी की व्यक्तित्व निर्माण कला के उत्कृष्ट नमूने हैं।

तेरापंथी सभा, जयपुर द्वारा तिलकनगर स्थित सौभाग्यविला में आयोजित गुरुदेवश्री तुलसी के महाप्रयाण दिवस का कार्यक्रम गुरूमंत्र के सामूहिक अनुष्ठान से शुरू हुआ। साध्वी मधुलताजी ने आचार्यश्री तुलसी के पद विसर्जन को महाविसर्जन बताते हुए कहा- पद और सत्ता की आपाधापी के इस युग में गुरूदेव द्वारा आचार्य पद का त्याग महान आश्चर्य के रूप में देखा गया।

इस अवसर प्रबुद्ध श्रावक और युवक रत्न राजेन्द्र सेठिया ने आचार्य तुलसी के कालजयी अवदानों की विस्तार से चर्चा की। साध्वी कनकश्रीजी द्वारा रचित भावपूर्ण भक्तिगीत 'घर-घर गूजें गीतांजलियां, अर्पित श्रद्धा कुसुमांजलियां' साध्वी मधुलताजी के साथ साध्वी वृंद ने स्वर दिया तो परिषद भावविभोर हो उठी।

तेरापंथ महिला मंडल जयपुर (शहर) की बहिनों ने मधुर गीत के माध्यम से गुरुदेव के बहुआयामी अवदानों की अवगति दी। युवा गायक संदीप भंडारी ने मधुर गीत से वातावरण को संगीतमय बना दिया। ज्ञानशाला की नन्हीं बोधार्थी गौरवी ने 'कैसी वह कोमल काया रे' गीत का संगान किया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की पूर्व अध्यक्षा पुष्पा बैद ने अपने प्रांजल भाव व्यक्त किये।

कार्यक्रम में विद्वान जैन मनीषी डॉ महावीरराज गेलड़ा, जय तुलसी फाउण्डेशन के अध्यक्ष पन्नालाल बैद, तेरापंथ महिला मंडल, जयपुर शहर अध्यक्ष निर्मला सुराणा, तेरापंथी सभा उपाध्यक्ष राजेन्द्र बांठिया आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

आभार व धन्यवाद ज्ञापन सभा के उपाध्यक्ष सुरेश बरड़िया ने किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी समितिप्रभा ने किया।

धम्मजागरणा-'शासन गौरव' साध्वी कनकश्रीजी के सान्निध्य में गुरुदेव तुलसी के २७वें महाप्रयाण दिवस पर रात्रिकालीन 'श्रद्धा स्वरांजलि' में साध्वी वृंद ने भक्ति गीतों के मधुर संगान के साथ महाप्राण गुरुदेव को श्रद्धाजंलि समर्पित की। नल बांठिया, सायर बागरेचा एवं मधुर संगायिका पूर्वी बांठिया तथा राखी दत्ता ने सुमधुर स्वरों में गीतों का जलवा बिखेरा।

राजराजेश्वरी नगर

तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशास्ता गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी का २७वां महाप्रयाण दिवस का आयोजन विसर्जन दिवस के रूप में राजराजेश्वरी नगर महिला मंडल द्वारा किया गया। सर्वप्रथम तुलसी अष्टकम की स्तुति से मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया।

अध्यक्ष लता बाफना ने सभी बहनों का स्वागत करते हुए आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रदत्त अवदानों का उल्लेख कर श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित संकल्प पत्र के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की एवं बहनों को संकल्पित होने की प्रेरणा दी। हेमलता सुराना ने तुलसी-स्तुति का जप करवाया। उपासिका कंचन छाजेड़ ने ध्यान का प्रयोग करवाया। प्रमुख वक्ता सरोज आर बैद ने विसर्जन दिवस पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अर्जन की पराकाष्ठा ही विसर्जन का आधार है। आचार्यश्री तुलसी की पद के प्रति अनासक्ति की भावना की फलश्रुति है उनका आचार्यपद विसर्जन, जो बन गया एक विलक्षण इतिहास। संरक्षिका गुलाबदेवी छाजेड़ ने कहा कि हमें दान शब्द को विभिन्न दृष्टिकोण से देखना चाहिए तथा बिना किसी दुराग्रह के समरसता के माहौल का निर्माण करना चाहिए तभी एक स्वस्थ रिश्ते की नींव पड़ेगी।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित विषय 'कन्यादान आखिर क्यों?' पर एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन रखा गया। राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य मधु कटारिया ने विषय के संदर्भ में अपने विचार रखते हुए प्रतियोगिता की जानकारी प्रदान की। बहिनों ने विषय पर अपने विचार रखे, जिसमें प्रथम स्थान पर सुधा दुगड़, द्वितीय हेमलता सुराणा, रुचिका पटावरी एवं तृतीय सरोज बोथरा रही। निर्णायक के रूप में विजयलक्ष्मी मणोत एवं बीना कोठारी ने सेवा प्रदान की। मंच का कुशल संचालन श्वेता कोठारी ने किया। कार्यक्रम की संयोजिका उपाध्यक्ष सुमन पटवारी ने आभार व्यक्त किया।

अररिया कोर्ट

तेरापंथी सभा के तत्वावधान में युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी के २७वें महाप्रयाण दिवस का आयोजन मुनि रमेशकुमारजी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। इस समारोह में बिहार के अनेक क्षेत्रों के श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

मानवता के मसीहा, आचार्यश्री तुलसी के विराट व्यक्तित्व-कर्तृत्व को उल्लेखित करते हुए मुनि रमेशकुमारजी ने कहा- 'बीसवीं शताब्दी के वर्चस्वशाली धर्मगुरु थे आचार्यश्री तुलसी। उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से देश को नैतिकता, सद्‌भावना, साम्प्रदायिक सौहार्द का पावन संदेश प्रदान किया तथा स्वकल्याण और परकल्याण के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया। अणुव्रत के संदेश को जन जन तक पहुँचान के लिये लंबी-लंबी पदयात्राएं की। भारत के तात्कालिक राजनेता, समाज सेवी, प्रबुद्ध नागरिक भी उनके समर्थन में सदैव अग्रणी रहे। तेरापंथ धर्मसंघ को अनेक अवदान दिये। इस धर्मसंघ का जो विराट स्वरूप हम देख रहे हैं, वह आचार्य तुलसी की ही देन है। आज के अवसर पर अणुव्रत की आचार संहिता को अपनाकर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि समर्पित करें। समाज की एकता और अखंडता को विनय और वात्सल्य जैसे गुणों को अपना कर सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण करें।'

मुनिश्री ने आचार्यश्री तुलसी के विसर्जन के सूत्र के बारे में बताते हुए कहा- 'विसर्जन का अर्थ है ममत्व को छोडना। केवल अर्जन ही अर्जन करेंगे तो अस्वस्थ होगे। अर्जन के साथ विसर्जन भी जरुरी है। इसे व्यापक संदर्भ में समझ कर इसे अपनाना चाहिए।'

मुनि रत्नकुमारजी ने कहा- आचार्य तुलसी ने मानव जाति के कल्याण के लिए जो अवदान दिये उनकी आज भी उपयोगिता है। समाज को उन अवदानों को अपने जीवन व्यवहार में अपनाना चाहिए।

इससे पूर्व श्रद्धांजलि समारोह का शुभारंभ मुनि रमेशकुमारजी द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चारण से हुआ। आचार्यश्री तुलसी की स्मृति में सामूहिक जप भी कराया गया। स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल ने तुलसी अष्टकम् से मंगलाचरण किया और विसर्जन गीत की प्रस्तुति दी। स्थानीय तेरापंथी सभा उपाध्यक्ष सचिन दुगड़ ने समाज की ओर से सभी का स्वागत किया। ज्ञानशाला के बच्चों ने आचार्यश्री तुलसी की स्मृति में शुद्ध उच्चारण सहित मंत्र जप से रोचक प्रस्तुति दी। तेरापंथी महासभा के उपाध्यक्ष नेमीचन्द बैद, नेपाल बिहार तेरापंथी सभा के अध्यक्ष भैरुदान भूरा, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष पंकज बोथरा, अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष प्रदीप चौरड़िया, अररिया आर एस तेरापंथी सभा के अध्यक्ष राजेन्द्र बेगवानी, फॉरबिसगंज के दीपक समदरिया आदि वक्ताओं ने आचार्यश्री तुलसी के जीवन पर भावपूर्ण विचारों को प्रस्तुत किया। तेममं फॉरबिसगंज एवं गौरव दुगड़ ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथी सभा के मंत्री राजू दुधोड़िया ने आभार ज्ञापित किया। अभातेयुप के पूर्व उपाध्यक्ष अमित नाहटा समारोह का सफल संचालन किया।

तेरापंथ प्रोफशनल फॉर्म फाउंडेशन-डे

राजाराजेश्वरी नगर, बैंगलोर

बैंगलोर के राजाराजेश्वरी नगर स्थित तेरापंथ भवन में युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि श्री दीप कुमारजी के सानिध्य में 'तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम' का 'फाउंडेशन डे' तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम- बैंगलोर द्वारा आयोजित किया गया।

मुनि श्री दीप कुमार जी ने कहा-तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम एक बुद्धिजीवी संस्था है। टीपीएफ के लोग जीवन में विवेक को अपनाएं। शिक्षा के साथ विवेक बना रहे तो शिक्षा और अधिक सुखदाई बन सकती है। आस्था का विकास भी जीवन की सफलता का बहुत बड़ा सूत्र है। चरित्र व्यक्ति का उज्ज्वल बना रहे । चरित्रनिष्ट ही देश और समाज का गौरव होता है। चरित्र जीवन की निधि है । टीपीएफ के मेंबर इन तीन सूत्रों का जीवन में विकास करते रहें। इस संस्था पर आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की कृपा रही, वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमण जी की कृपा है।

कार्यक्रम में टीपीएफ की बहनों ने मंगलाचरण किया। अध्यक्ष हितेश गिड़िया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हिम्मत मांडोत, राष्ट्रीय सहमंत्री लक्ष्मीपत मालू, आरआर नगर सभा अध्यक्ष छत्रसिंह सेठिया, तेमम अध्यक्षा लता बाफना, गांधीनगर सभा अध्यक्ष कमल जी दुगड़ ने विचार रखे। टीपीएफ की गतिविधियों का वीडियो दिखाया गया। संचालन संस्था मंत्री पीयूष डागा ने किया। टीपीएफ की ओर से डेंटल एवं फिजियो कैंप भी आयोजित हुआ।

साध्वीवृंद का मंगल प्रवेश

कानपुर

साध्वी संगीत श्री आदि ठाणा का कानपुर नगर में मंगल प्रवेश हुआ। सर्वप्रथम साध्वीवृंद उन्नाव जिले के उपनगर शुक्लागंज से विहार करती हुई गंगापुल पर पधारीं, जहां कानपुर श्रावक समाज साध्वीवृंद के आगमन की प्रतीक्षा में उपस्थित था। कानपुर तेरापंथी सभा अध्यक्ष धनराज सुराणा, मंत्री संदीप जम्मड, महिला मंडल अध्यक्ष शालिनी बुच्चा, तेरापंथ युवक परिषद मंत्री राहुल बुच्चा ने संपूर्ण श्रावक समाज की ओर से साध्वीवृंद का स्वागत अभिनंदन किया।

महिला मंडल की बहनों ने एक मधुर गीतिका का संगान किया। आचार्य महाश्रमण एवं तेरापंथ के संघीय उद्घोषों से दोनों शहरों की सीमा गुंजायमान हो गई। लगभग ६ किलोमीटर सीमा से विहार करके साध्वीवृंद का कानपुर के आनंदपुरी क्षेत्र में गेलड़ा परिवार के निवास स्थान पर पदार्पण हुआ। यहां पर दिगंबर, स्थानकवासी, मूर्तिपूजक संप्रदाय के लोगों ने तथा तेरापंथ समाज के विशाल जनसमूह ने साध्वीवृंद का स्वागत सत्कार किया।

आत्मार्थी व निर्जरार्थी संत थे मुनि अजय प्रकाश

गंगाशहर।

तेरापंथ भवन गंगाशहर में मुनि अजय प्रकाशजी का गुणानुवाद करते हुए मुनि चैतन्य कुमारजी 'अमन' ने कहा- मुनि अजय प्रकाशजी प्रोढ़ावस्था में सहपरिवार दीक्षित हुए। दीक्षा लेने के बाद उन्होंने अपने जीवन को तपस्या में झोंक दिया। एकांतर तप, बेले-बेले और तपस्या की लड़ी करते हुए कई मासखमण एवं बड़ी तपस्या करके मानों मनुष्य जीवन का पूरा सार निकाल लिया। तपस्या के साथ मौन, ध्यान, स्वाध्याय में भी पूरा समय लगाते थे। ऐसा लगता है कि वे निर्जरार्थी, आत्मार्थी साधु थे। अंतिम समय में एक महीने के तप के उपरांत संथारा स्वीकार कर अपना आत्मकल्याण किया। ऐसे संतों की तप साधना से संघ की महान प्रभावना होती है।

मुनि अमन ने बताया- मुनि अजयप्रकाश की संसारपक्षीया धर्मपत्नी साध्वी नीतिप्रभा एवं पुत्री साध्वी तन्मयप्रभा ने भी वर्तमान में आचार्य महाश्रमण की अनुशासना में साधनारत हैं। २० वर्ष के साधुत्व जीवन में उन्होंने अनेक यात्राएं की। सेवाकेन्द्र में लगातार तीन वर्ष सेवा चाकरी का कार्य किया। पिपाड़ सिटी निवासी एवं चेन्नई प्रवासी होकर गृहस्थ जीवन में अनेक साधु-साध्वियों की सेवा की है। अंतिम समय में शारीरिक वेदना को समभाव से सहन करते हुए संथारा-संलेखना करते हुए अपना आत्म कल्याण किया। उनके प्रति अपनी आध्यात्मिक मंगलकामना करता हूं।

इस अवसर पर मुनि श्रेयांस कुमारजी, मुनि विमल बिहारीजी, मुनि प्रबोध कुमारजी ने भी मुनि अजय प्रकाश के प्रति आध्यात्मिक मंगल भावना अभिव्यक्त की।

मुनि अजयप्रकाश के प्रति उद्‌गार

अर्हम

साध्वी तन्मयप्रभा

अजयप्रकाशजी स्वामी तेरी, साधना रंग लाए
चैतन्य दीप जाए।
शुक्लध्यान में रहो निरंतर, यही भावना भाए
चैतन्य दीप जल जाए।

संयम पथ पर कदम बढ़ाया, हम तीनों थे साथी
आज अकेले क्यों बनते हो, संथारे के प्रार्थी।
तपोमार्ग पर चलने का, साहस मुझमें भी आए।।

'आत्मा भिन्न शरीर भिन्न की', अनुभूति हो हरपल
राग-द्वेष की किंचित मात्र, ना कोई हो हलचल
ऊंचा लक्ष्य बनाया तुमने, शीघ्र फलित हो जाए।।

तीव्र तुम्हारी उदर वेदना, अद्भूत समताधारी
वर्धमान भावों की श्रेणी, उच्च मनोबलधारी
करूं प्रार्थना सिद्ध साधना, लक्षित मंजिल पाए।।

त्रिभुवन तारणहारी गुरूवर, है परम उपकरी
मिला योग धर्मेश मुनि का, सदा रहा सुखकारी
चित्त समाधि, सेवा का मुनि धीरज अवसर पाए।।

तेरी शिक्षाओं को सदा रखूंगी अपने सिर पर
शीघ्र करूंगी पीएचडी, विश्वास रखो तुम मुझ पर
तव जैसी संकल्प दृढ़ता, मम जीवन में आए।।

ना जीने की वांछा, अब ना मृत्यु की आकांक्षा
भय चिंता का लेखा नहीं, ना मन में कोई आशा
आत्मा में जो रमण करे, वह निर्मोही कहलाए।।

लय : जहां डाल-डाल पर

साध्वीवृंद का मंगल प्रवास

रायबरेली (उप्र)

साध्वी संगीतश्री ने अपना आठ दिवसीय रायबरेली प्रवास संपन्न किया। लगभग 11 वर्षों के अंतराल के बाद किसी साध्वी वृंद का यहां पर आगमन हुआ। बड़ी संख्या में श्रावकगण सेवा का लाभ लेते हुए इस दुर्लभ क्षण के साक्षी बने।

श्रावक समाज ने साध्वीवृंद के पदार्पण को करूणानिधान पूज्य गुरूदेव की असीम अनुकंपा बताते हुए साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। उत्तर प्रदेश में वाराणसी, मिर्जापुर, प्रयागराज, रायबरेली में सफल प्रवास संपन्न करके साध्वीवृंद 2023 के अपने चातुर्मास क्षेत्र कानपुर की ओर अग्रसर हैं। विहार मार्ग में भी साध्वीवृंद ने अनेक लोगों को नैतिकता, नशामुक्ति तथा सद्भावना की प्रेरणा प्रदान की।

A New innovation of Akhil Bharitya Terapanth Yuvak Parishad

A monthly inspiring rays productive magazine that assures the complete nutrition of mind, body and soul for the next generation.

ingenious Yuva

If you want to become a member of Ingenious Yuva Magazine then pick your plan.

₹ 800/- (1 Year : By Courier)

₹1500/- (2 Years : By Courier)

₹ 3500/- (5 Years : By Courier)

: Account Name :
Akhil Bhartiya Terapanth Yuvak Parishad
Account No. : 1027010002800
IFSc Code : PUNB0102710
Bank : Punjab National Bank, Ladnun
MICR : 341022075

: ABTYP Central Office :
Mob.: +91 8905 99 50 01
E-mail: ladnunoffi ce@abtyp.org

मुनि अजयप्रकाश के प्रति श्रद्धांजलि

अर्हम

:: साध्वी नीतिप्रभा ::

आपरै भागां री, के कहूं मैं बात।
जिन भावां स्यू संथारो पचख्यो, पूर्ण कियो साक्षात।।

सपरिवारे संजम लीनो, बणी नूई आं ख्यात।
जय-जयकारे गूंज रह्या है, जीवन जीया अवदान।।

सिंहवृत्ति स्यूं संजम लीन्हो, कर्‌यो थे म्हानै मात।
वैराग को हुयो भाव बाद में, आ पहली क्यूं बात।।

तप-जप में थे रत रहता, आ थारी करामात।
सहज समता भाव बहता, बात नहीं अज्ञात।।

खुली पोथी जीवन थारो, सबमें है विख्यात।
भीतर बारै एक सम हाँ, संशय नहीं तिलमात।।

एवं खु तस्स सामण्णं ओ, सूत्र णै प्रणिपात।
खणं जाणाहि पंडिए हाँ अवसर तहकीकात।।

बीमारी में तप कमाण ले, कर्मा री कीनी घात।
भव भ्रमण अल्पीकरण कर, पूर्ण करो यातायात।।

इती भी के जल्दी कर्‌यांथं, बंद हूता के खात।
महाप्रज्ञ महाश्रमण किरपा, लुटाई दोन्यू हाथ।।

धर्मेश धीरज लाभ उठायो, सेवा कर निःस्वार्थ।
नीति तन्मय साज दिरा जो, आ म्हारी फरियाद।।

लय : आपणै भागां री

अर्हम

:: साध्वी लावण्यश्री ::

अजय अजेय बनने खातिर इस भैक्षव गण में आए थे
डायमंड नगरी सूरत में असली सूरत वो पाए थे।

पूरा परिकर योगीराज के श्रीचरणों में आया था
महामना महाप्रज्ञ शरण सब कुछ अर्पण करवाया था
अजय-नगीना गुरु सन्निधि संयम की खुश्बू लुटाए थे।

भर यौवन में रागी से वैरागी बन दिखलाया था
अर्धांगिनी नगीना ने भी पूरा साथ निभाया था
एक दशक की वय में तन्मय गण के दिल में छाए थे।

कई वर्षों से तन में व्याधि मन मजबूत मुनि का
अजय मुनि को योग मिला धीरज धर्मेश मुनि का
ज्योतिचरण के शुभ साये में संयम शतदल विकसाए थे।

धन्य धन्य है समताधारी अनशनकर्ता अजयप्रकाश
शीघ्र मिले मोक्ष की मंजिल पाओ जल्दी अमिट प्रकाश
भावों का हम अर्ध्य चढ़ाकर श्रद्धा गीत सुनाते हैं।

लय- कलयुग बैठा मार कुण्डली

अर्हम

:: शासनश्री साध्वी सरोजकुमारी ::

सचमुच अनशन भारी रे, बहुत कठिन है काम
तप से रखना इकतारी रे

अजयप्रकाश जी मुनिवर, वैरागी बने सह परिकर
नीति तन्मय उपकारी रे, बहुत़

दशमेश गुरु से दीक्षा, जीवन की करी समीक्षा
गुरु आज्ञा तपस्या धांरी रे, बहुत़

भोगी से बने थे योगी, योगी से बने उपयोगी
खिलती संयम क्यारी रे, बहुत़

खुल्ली किताब सम जीवन, कर्मों का करते घर्षण
अब बनते अनशन धारी रे, बहुत़

काया वाणी को कसकर मन पर पूरा वश रखकर
अपनी आत्मा उद्धारी रे, बहुत़

गुरुकृपा मिली मनचाही, धर्मेश, धीरज वाहवाही
सहयोगी साताकारी रे, बहुत़

अनशन की ओढ़ चदरिया, कण-कण में छाई खुशियां
यह अवसर मंगलकारी रे, बहुत़

मानो तर गए भव सागर, अब बाकी केवल गागर
मिट जाए कथा व्यथा री रे, बहुत़

गुरु महाश्रमण वरतारो नैया को पार उतारो।
गुण गाए सरोजकुमारी रे,
खमतखामणा बारम्बारी रे, बहुत़

लय : कैसी वह कोमल काया रे़

अर्हम

:: साध्वी नीतिप्रभा, तन्मयप्रभा ::

संयममय जीवन हो।
यात्रा मंगलमय हो।।
धन्य-धन्य है आत्मा थारी, महके सौरभ विस्मय हो।।
यात्रा मंगलमय हो।।

कांकरिया कुल उजियारो, माँ सज्जन लाल दुलारो।
पिता माणकचंद सौभागी, पुत्र मिल्यों मनहारो।
आठों भाई-बहनों में ओ, तीजों अजु अजय हो।।

दादी रूपाबाई तेरापंथ की, गहरी नीवें लगाई।
संस्कारों का पोषण देकर, दी मंजिल को ऊँचाई।
स्वर्ग लोक से तुम्हें निहारें, इसमें क्यों समय हो।।

सपरिवार इतिहास रच्यो, लो हो महाप्रज्ञ बरतारों।
चढ़ती जवानी संयम धार्‌यो, ढलती जवानी संथारों।
तप-जप करता शौर्य बढ़ायो, हर पल चेतन लय हो।।

नीति 'तन्मय' संग दीक्षा ली, फिर एकत बढ़ें चरण।
उद्‌घाटित कर दे रहस्य तो, ज्योति से ज्योति मिल्यो क्यों।
चढ़ती श्रेणी साथ निभाया, अब सहसा क्यों द्वय हो।।

किड़नी की सुनी वेदना कइयों का दिल घबराया।
घोर वेदना देख उदर की, हम सबका चित्त चकराया।
उत्सुक हो परमानंद पाने, दृढ़ता समता को प्रणय हो।।

तारण-तरण तीर्थपति, गुरु महाश्रमण उपकारी।
अंगुली पकड़ राह दिखावे, दृष्टि दे सुखकारी।
मुनि धर्मेश धीरज योग शुभंकर गण सेवा बनी अक्षय हो।।

करां आपसे खमतखामणा, जो राग-द्वेष मन आयो।
प्रत्यक्ष परोक्ष में कोई, अशुभ भाव बरतायो।
लक्षित अब सोपान चढ़ो तुम, शुभ भावों की जय हो।।

लय : संयममय जीवन हो

अर्हम

मुनि चैतन्य 'अमन'

अनशन धारयो पार उतारयो मुनिवर अजयप्रकाशजी
जीवन सुधार्यो देखो सांतरो

तेरापंथ संघ में देखो किन्हो बहुत विकासजी
तप भी किन्हो भांत-भांत रो

जनम लियो पिपाड़ सिटी में माता सज्जन देवीजी
पिताश्री माणकचंदजी नाम हो

पत्नी-पुत्री सह दीक्षित हो बगाया शासन सेवीजी
कियो है ओ तो मोटो कामजी

दीक्षित होकर अपणो जीवन झोंक्यो तप-जप मांहीजी
सोच्यो अब करणो निज कल्याणजी

समता-समभावां स्यूं सेवा सहिष्णुता अपणाईजी
मानो किन्हो साचो रसपानजी

मौन ध्यान स्वाध्याय आय स्यूं सदा खजानो है भरयो
जीवन जीयो है अपणो शान स्यूं

रह्या अजेय मुनि अजय प्रकाश काम अनूठो है कर्यो
तन्मय बण रह्या है अपणै ज्ञान स्यूं

मुनि धर्मेश सम्बोधि उपवन में संथारे पचक्खायो
पूर्णकरी है मुनि री भावना

धीरज धरणै स्यूं ही देखो आछो अनशन है आयो
फलगी है मन री सारी कामना

आर्यप्रवर श्री महाप्रज्ञ स्यूं दीक्षित उधना शहर में
महर प्रभुवर री पाई है सदा

ज्योतिचरण श्री महाश्रमण री किरपा दिल में ही जमे
चौतन्य 'अमन' पावै है सर्वदा।

लय : आओ आओ भिक्षु स्वामी

दुर्लभ मानव जीवन का लाभ उठाएं : आचार्यश्री महाश्रमण

नालासोपारा, मुम्बई 09 जून 2023

जिन शासन प्रभावक आचार्य महाश्रमण आज प्रातः विहार कर नालासोपारा पधारे। स्थानकवासी साध्वियों ने भी पूज्यवर के दर्शन किये।

पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए परम पावन ने फरमाया कि हमारे जीवन में शिक्षा का बहुत महत्व है। साधु या गृहस्थ सभी के द्वारा शिक्षा प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। प्राचीन समय में तो पूर्वो का भी अध्ययन करने का प्रयास किया जाता था। वर्तमान में भी आगम स्वाध्याय का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

शास्त्रकार ने बताया है कि पांच ऐसे स्थान–कारण हैं, जिनसे आदमी शिक्षा को प्राप्त नहीं हो सकता। पहला कारण है– घमंड–अहंकार। ज्ञान प्राप्त करना है तो ज्ञान और ज्ञान प्रदाता के प्रति विनय का भाव हो। जिसके पास बुद्धि है, उसके पास बल है। शरीर बल के साथ बौद्धिक बल भी हो। बुद्धि का भी विनय करें। ज्ञान की अवहेलना न करें, घमंड से दूर रहें।

दूसरा कारण है– क्रोध–गुस्सा। तीसरा बाधक तत्त्व है प्रमाद। गुस्सा तो करना ही नहीं चाहिये। प्रमाद से भी बचें। आसक्ति ज्यादा न रखें। चौथी बाधा है– रोग–बीमारी। ज्ञान प्राप्ति के लिये शरीर और चित्त स्वस्थ हो। पेट साफ– सौ रोग माफ। पांचवीं बाधा है– आलस्य। इन पांचों से आदमी बचे तो ज्ञान अच्छा प्राप्त किया जा सकता है। ज्ञान के साथ व्यक्ति का आचार, व्यवहार और संस्कार अच्छे हो। जीवन में अहिंसा, सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति रहे। अणुव्रत के नियम जीवन में हो। जीवन विज्ञान से विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार आ सकते हैं। थोड़ा समय अध्यात्म साधना में भी लगाएं। ये दुर्लभ मानव जीवन प्राप्त है, इसका अच्छा लाभ उठाएं। साधुओं की संगति से अच्छी गति प्राप्त हो सकती है।

वसई, विरार और नालासोपारा एक झूमका–सा है। दो दशक पश्चात यहां आना हुआ है। यहां धार्मिक गतिविधियां अच्छी चलती रहे।

साध्वी प्रमुखाश्री ने कहा कि व्यक्ति जब तक अपने स्वरूप को नहीं समझता है, तब तक वह अनन्त दुःखों को प्राप्त करता रहता है। जिस दिन अपने स्वरूप को जान लेता है, उसके सारे दुःख समाप्त हो जाते हैं। दो शब्द है– स्वरूप और रूप। दृश्य जगत में रूप का साक्षात्कार हो रहा है, पर हम स्वरूप से अनभिज्ञ हैं। स्वरूप स्थायी है। आत्मा का दर्शन होता है। हम स्वरूप का साक्षात्कार करने की दिशा में आगे बढ़ें।

पूज्यवर के स्वागत में नालासोपारा सभाध्यक्ष लक्ष्मीलाल मेहता, तेयुप अध्यक्ष किशन कोठारी, महिला मंडल गीत, रमेश हिरण, पूर्व उपमहापौर उमेश नायक, ईसाई समाज से फादर माईकल रोरा, स्थानकवासी समाज से नरेन्द्र लोढ़ा, नगर सेवक प्रवीण वीरा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला के बच्चों ने गजसुकुमाल पर और कन्या मंडल ने अणुव्रत के 11 नियमों पर सुन्दर प्रस्तुति दी।

पूज्यवर ने महिला मंडल द्वारा प्रस्तुत संकल्प पत्र के अनुसार संकल्प स्वीकार करवाये।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार ने किया।

आत्मषुद्धि की चेतना... पृष्ठ 12 का शेष

बन जाये। पुरूषार्थी पुरूष है, उसका लक्ष्मी वरण करती है। भाग्य को प्रधान मानने वाले कुत्सित पुरूष है। एक बार पुनः प्रयत्न करो। सफलता मिल सकती है।

हर प्रवृत्ति में ध्यान को जोड़ देवें। जागरूकता के साथ राग–द्वेष न हो। भाव क्रिया, प्रतिक्रिया विरति, मैत्री मिताहार और मित भाषण– ये पांच सूत्र जीवनशैली से जुड़ जाए। इस तरह स्वाध्याय, सद्ध्यान, निर्मलता और निष्पाप व तप में रहने से चेतना की विशुद्धि हो सकती है। चेतना पर लगे मल को दूर करना है। अपनी परिस्थिति देखकर साधना में समय लगाएं। ज्ञाता–दृष्टा भाव की साधना होती रहे।

साध्वी निर्वाणश्री का सिंघाड़ा आज यहां पहुंचा है। सभी साध्वियां धर्म की खूब प्रभावना करती रहें। इस शिक्षालय में आये हैं। यहां विद्यार्थियों को अन्य शिक्षा के साथ धार्मिक, आध्यात्मिक संस्कार मिलते रहें।

साध्वी निर्वाणश्री ने श्रीचरणों में अपनी भावना अभिव्यक्त की। साध्वियों ने समूह गीत से पूज्यवर की वर्धापना की। आचार्य महाप्रज्ञ की कहानियों के अंग्रेजी अनुवाद की प्रति पूज्यवर को समर्पित की गई। पूज्यवर ने शिक्षण संस्थान परिवार व अन्य आगुन्तकगण को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संकल्पों को समझाया।

इंस्टीयूट के श्री हितेन्द्र ठाकुर, स्थानीय विधायक श्रीमती प्रवीणा ठाकुर, विरार के सभापति योगेश्वर पाटिल ने पूज्यवर के स्वागत में अपनी भावना व्यक्त की। व्यवस्था समिति द्वारा आगंतुक अतिथियों का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार ने किया।

प्रेक्षाध्यान विश्वशांति और जनकल्याण का महत्वपूर्ण साधन है-अणुव्रत

दिल्ली -आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन से मैं छात्रजीवन से परिचित हूं। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी की अणुव्रत यात्रा अत्यन्त महत्वपूर्ण और विश्वशांति व जनकल्याण का महत्वपूर्ण साधन है। उक्त आशय के विचार नव मनोनीत केंन्द्रीय कानून मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दिल्ली, जैन विश्व भारती, अणुविभा सोसाइटी, जैन विश्व भारती संस्थान, अग्रवाल मित्र परिषद और अरिवल भारतीय अणुव्रत न्यास द्वारा आयोजित कार्यक्रम में अणुव्रत भवन प्रांगण में व्यक्त किए।

चर्तुविध धर्मसंघ की उपस्थिति में आयोजित इस संघ प्रभावक कार्यक्रम में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी, 'शासनश्री' साध्वी संघमित्राजी, 'शासनश्री' साध्वी शीलप्रभाजी के प्रेरक उद्बोधन हुए। साध्वी वृंद द्वारा गीत की प्रस्तुति हुई। मंगलाचरण अणुव्रत गीत द्वारा अणुव्रत समिति दिल्ली व गाजियाबाद के सदस्यों ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता 'शासन सेवी' कन्हैयालाल जैन पटावरी ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो संजीव शर्मा, प्रबंध मंडल सदस्य, जैन विश्व भारती संस्थान ने अभिनंदन वक्तव्य प्रस्तुत किया।

जैन विश्व भारती की ओर से ट्रस्टी पन्नालाल बैद, अग्रवाल मित्र परिषद के अध्यक्ष संजय जैन, दिल्ली तेरापंथी सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया, अणुविभा महामंत्री भीखम सुराना, अणुव्रत न्यास प्रबंध न्यासी के़सी़ जैन आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा मंजू जैन, तेयुप अध्यक्ष विकास सुराणा, टी़पी़एफ़ अध्यक्ष राजेश गेलड़ा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष शांतिलाल पटावरी, कुसुम सुराणा आदि ने संस्थागत रूप से अर्जुनराम मेघवाल का शाल्यार्पण, अंगवस्त्र और साहित्य से सम्मान किया। कुसुम लूणिया ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया।

साहित्यचेता ललित गर्ग की पुस्तक 'जीवन का कल्पवृक्ष' का अर्जुनराम मेघवाल ने लोकार्पण किया। बड़ी संख्या में दिल्ली एनसीआर क्षेत्र के श्रावक समाज की उपस्थिति से भव्य कार्यक्रम आयोजित हुआ, संचालन दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया। कार्यक्रम में समाज भूषण मांगीलाल सेठिया, महासभा उपाध्यक्ष सुमन नाहटा, प्रसिद्ध मोटिवेटर टी एस मदान, अंर्तराष्ट्रीय कवि राजेश चेतन, जीतो नोर्थजोन की सोनाली जैन सहित दिल्ली सभा के अनेक पदाधिकारी, अणुव्रत न्यास के न्यासी व गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। कार्यक्रम अत्यन्त संघ प्रभावक रहा।

तेरस का त्योहार, सिरियारी हुई गुलजार

सिरियारी

भिक्षु भुमि सिरियारी में ज्येष्ठ सुदी तेरस को भव्य भिक्षु भक्ति का आयोजन किया गया।

प्रत्येक मास की तरह इस बार भी लोगों को इस तेरस का इंतजार था। विशेष बात यह थी कि अलग–अलग स्थान से करीब 130 बच्चे भी कार्यक्रम में शामिल थे। ज्ञातव्य है कि करीब 15 अलग–अलग स्थानों से बच्चे शिविर के उद्देश्य से उपस्थित थे।

कार्यक्रम का प्रारंभ मुनि आकाशकुमारजी के द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार से हुई। बाल कलाकार की प्रस्तुति को जनता ने सराहा। कार्यक्रम में अनेक स्थानों से अन्य लोग उपस्थित थे, जिसमें दिल्ली, हरियाणा, मुंबई के लोग प्रमुखता से थे।

मुनि आकाशकुमार ने अपने चित–परिचित अंदाज में वक्तव्य दिया तथा उसी अंदाज में कविता पाठ किया। मुनि हितेन्द्र ने सुमधुर स्वरों में भावपूर्ण गीतिका प्रस्तुत की। पाली से समागत प्रख्यात संगायक राहुल बालड़ ने संयोजक का दायित्व संभाला व मधुर गीतों से समां बांधा।

सिरियारी संस्थान की ओर से कमल बैद व विजयसिंह ने संगायकों का सम्मान किया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम में अभातेयुप का विशिष्ट योगदान रहा व जेटीएन द्वारा कार्यक्रम का यू–ट्यूब पर लाइव प्रसारण भी किया गया।

प्रभावशाली और प्रेरणादायी रहा 39 दिवसीय डीडवाना प्रवास

डीडवाना - साध्वी संघप्रभा आदि ठाणा-३ का डीडवाना में ३९ दिवस का प्रभावी प्रवास अत्यन्त सफलताजनक रहा। प्रतिदिन प्रातः प्रवचन, मध्यान्ह में ज्ञानशाला प्रशिक्षण व रात्रि में तात्त्विक एवं ऐतिहासिक जानकारियों का सुन्दर उपक्रम चला।

इस दौरान प्रति शनिवार सामायिक, शुक्ला तेरस को आचार्य भीखण वर्णासरी धम्म जागरणा, प्रति रविवार अन्ताक्षरी आदि रोचक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। दस प्रत्याख्यान की एक लड़ी, उपवास की बारी, ऊँ भिक्षु के सवा लाख जप में भी अनेक भाई बहनों ने अपने नाम लिखाए।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेश चौपड़ा ने कहा- आचार्य महाश्रमण की महती कृपा से हमें साध्वीश्री का ऐसा शान्त, प्रेरक, उपलब्धिदायक प्रवास मिला है। तीनों साध्वियों ने क्षेत्र की आध्यात्मिक सार-संभाल में जो श्रम किया है, वह डीडवानावासियों को सदैव याद रहेगा। सभी कार्यक्रमों में श्रद्धालुओं की बहुत अच्छी उपस्थिति रही।

अध्यात्म साधना का परम लक्ष्य मोक्ष : महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण

वसई, मुम्बई 10 जून 2023।

अहिंसा के अग्रदूत आचार्य महाश्रमण अपनी धवल सेना के साथ आज प्रातः वसई पधारे। महामनीषी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि मोक्ष एक शब्द है और अध्यात्म साधना का परम लक्ष्य मोक्ष होता है। भले उसे निर्वाण मुक्ति या सिद्धालय कह दें। मूल बात है सर्व दुःख मुक्ति शाश्वत रूप से प्राप्त हो जाती है, वह मोक्ष अवस्था होती है।

साधु जीवन स्वीकार करने का मूल लक्ष्य है, मोक्ष प्राप्ति की कामना। मोक्ष किन कारणों से प्राप्त नहीं होता है, उसके लिए कई बातें बतायी गयी है। पहली बात बतायी जो आदमी प्रवृति से गुस्सैल होता है। मुक्ति पाने के लिए जरूरी है, गुस्सा छोड़ना। गुस्सा नहीं टूटेगा तो संसार नहीं छूटेगा। गुस्सा तो समाज, परिवार या व्यवहार में भी काम का नहीं है। दिमाग शांत रहना चाहिये।

शीतलनाथ भगवान का जप कर उनसे प्रेरणा लें कि हम शीतल रहें। संत वह होता है, जो शांत होता है। गृहस्थ भी शांत रहे तो अच्छा है। बड़े का बड़प्पन है कि मौके पर हौठ बंद रखे। बड़ा वह है जो बात–बात में कड़ा न हो। उपशम से क्रोध को जीतो। उपशम की अनुप्रेक्षा करो।

दूसरी बात है– गर्व करना। बुद्धि और ऋद्धि का अंहकार नहीं, उसका अच्छा उपयोग करें। न अंहकार न आसक्ति। ज्ञान है फिर भी मौन रखना, शक्ति है फिर भी शांति रखना। बिना सोचे तत्काल निर्णय न करें। आवेशशीलता अच्छे निर्णय की शत्रु बन सकती है। अनुशासनहीनता नहीं करनी चाहिये। अदृष्टधर्मा न हो। संविभाग नहीं करना। दूसरे का हक न मारें।

आदमी को जीवन में कुछ करना चाहिये। ये मानव जीवन हमें प्राप्त है, जिसे दुर्लभ कहा गया है। इसे पाकर धर्म के मार्ग पर चलें। आत्मा का कल्याण हो, वैसा करें। संवर और निर्जरा की साधना करें। जीवन में धार्मिकता, आध्यात्मिकता आये तो जीवन सफल सुफल बन सकता है। अच्छी साधना करने वाला मोक्ष की निकटता को प्राप्त हो सकता है।

वसई में पहले हम नाथ के साथ आये थे। अब हम आये हैं। साध्वी प्रज्ञाश्री से आज यहां मिलना हुआ है। चारों सतियां अचछा काम करती रहें।

साध्वी प्रमुखाश्री ने कहा कि सज्जन का हृदय दूसरों के संताप को देखकर द्रवित हो जाता है। परम पूज्य आचार्य प्रवर भी करूणाशील हैं। अनुकंपा की चेतना से आपका हृदय ओतप्रोत होता है। चित्त में समाधि वहीं दे सकते हैं जिनके भीतर करूणा है।

साध्वी प्रज्ञाश्री ने पूज्यवर की अभिवंदना में अपनी भावना अभिव्यक्त की। साध्वीश्री का पिछला चतुर्मास वसई में ही था। साथ की साध्वियों ने गीत से अभ्यर्थना की।

पूज्यवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष प्रकाश संचेती, पूरे तेरापंथ समाज द्वारा समूह गीत, तेयुप अध्यक्ष कमलेश लोढ़ा, वसई जैन महासंघ से बसंत भाई बोहरा, मेवाड़ स्थानकवासी समाज से सुरेश पोखरणा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

डिजीटल के दुष्प्रभाव पर ज्ञानशाला की सुन्दर प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार ने किया।

आत्म शुद्धि की चेतना के लिए साधना करें : आचार्यश्री महाश्रमण

विरार ईस्ट 07 जून 2023।

तपःपूत आचार्य महाश्रमण आज प्रातः विरार ईस्ट के विरार इंस्टीट्यूट आज टेक्नोलॉजी विद्या संस्थान में पधारे। पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए महातपस्वी ने फरमाया कि पूर्वकृत मल जो आत्मा पर चढ़ा हुआ है, उसका निराकरण करना और चेतना की शुद्धि हो, यह कैसे हो सकता है।

इस संदर्भ में बताया गया है कि स्वाध्याय और सद्ध्यान में जो रत रहता है, उसकी चेतना शुद्धता को प्राप्त हो सकती है। शास्त्रकार ने यहां ध्यान न कहकर सद्ध्यान कहा है। सद्ध्यान भी हो सकता है, और असद्ध्यान भी हो सकता है। सद्ध्यान से चेतना की विशुद्धि हो सकती है। चार ध्यान में दो असद्ध्यान है और दो सद्ध्यान है। सद्ध्यान अध्यात्म की साधना का एक महत्वपूर्ण अंग है।

शरीर में शीर्ष का, वृक्ष में मूल का जो स्थान है, सर्व साधु धर्म में वही स्थान ध्यान का होता है। ध्यान में एकाग्रता, निर्विचारता और योग निरोध की साधना हो। हमारे यहां प्रेक्षाध्यान के नाम से ध्यान की पद्धति चलती है। नाम का भी महत्व होता है। मेरा मन कल्याणकारी संकल्प से युक्त रहे।

पुरूषार्थ करने पर भी सफलता न मिले तो कोई अफसोस नहीं। फल में हमारा अधिकार नहीं है। सपने संकल्प बन जाए। शेष पृष्ठ 11 पर

मुंबई की पावन धरा हुई महाश्रमणमय

मुनि अजयप्रकाशजी का देवलोकगमन

आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि श्री अजय प्रकाश का ६ जून २०२३ को संथारा पूर्वक देवलोक गमन हो गया। मुनि अजय प्रकाश जी का जन्म १९६० में पीपाड़ हुआ। उनकी माता सज्जनदेवी एवं पिता माणकचंद कांकरिया थे। उनकी शिक्षा हायर सैकेंडरी थी। उन्होंने ४२ उम्र में आषाढ़ शुक्ला सप्तमी, ६ जुलाई, २००३ दीक्षा-गुरु आचार्यश्री महाप्रज्ञजी से दीक्षा ग्रहण की। मुनिश्री ने तीन साल लगातार सेवा चाकरी कर विशिष्ट कार्य किया। मुनिश्री ने राजस्थान, गुजरात, दक्षिण भारत, महाराष्ट्र, आंध्रा, कर्नाटक आदि क्षेत्रों में विचरण किया। परिवार से साध्वी नीतीप्रभाजी एवं साध्वी तन्मयप्रभाजी धर्मसंघ में दीक्षित हैं। मुनिश्री ने साधु जीवन में एकासन अनेक उपवास, बेला, १० साल एकांतर, २१ माह तक बेला की तपस्या, ११ की लड़ी १, उसमें दो अठाई तपस्या, मासखमण की तपस्या ८, ४१ की तपस्या १ बार की। ५-६ घंटे रोजाना स्वाध्याय, ध्यान, जप उनकी नियमिता थी। अंतिम समय में मुनिश्री बीमारी असहनीय वेदना में भी सदैव समता में रहते थे। अंतिम समय में संथारा धारण कर मोक्ष मार्ग को प्राप्त हुए।